हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5118 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता॥ | 2073 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
विहिप-केन्द्रीय प्रन्यासी मण्डल एवं प्रबंध समिति संयुक्त बैठक	5
मुस्लिम ने निकाह के शादी कार्ड पर छपवाई गणेशजी की फोटो	6
नेताजी सुभाष चंद्र बोस	7
26 जनवरी-गणतन्त्र दिवस	10
लाला लाजपत राय	11
धर्म, जाति, समुदाय, नस्ल या भाषा के नाम पर वोट संबंधी निर्णय स्वागत योग्य	16
शत शत नमन हे देव दयानंद	16
सूर्य की पहली किरण से करें नव-वर्ष का स्वागत	17
धार्मिक पवित्रता का प्रश्न	18
कुनबे की कलह से ढहेगा समाजवादी साम्राज्य	19
हैप्पी न्यू ईयर या नववर्ष, तय कीजिए	21
विहिप द्वारा स्वामी राघवानन्द जी महाराज के जन्मोत्सव पर स्वास्थ्य मेला और रक्तदान शिविर का आयोजन	23
उत्तर प्रदेश में फहराया पाकिस्तान का झंडा	23
विश्व हिंदू परिषद् द्वारा तुलसी पूजन दिवस समारोह	24
बर्मा, म्यंमार, बंगलादेश के नागरिकों का हो निर्वासन	24
गठबंधन के सहारे राजनीतिक उत्थान की तलाश	25
भारतीय मूल की महिला बनीं मेयर	26

अथदशमोऽध्यायः

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥३७॥

वृष्णिवंशियों में वासुदेव अर्थात मैं स्वयं श्री कृष्ण, पाण्डवों में धनंजय अर्थात् तू, मुनियों में वेदव्यास और कवियों में शुक्रचार्य कवि भी मैं ही हूँ।

वासुदेव मैं वृष्णि जनों में-मैं ही अर्जुन पाण्डु सुतों में वेद व्यास मेरी विभूति हैं-संस्कृत वाङ्मय के अधिपति हैं वेदादिक शास्त्रों का चिन्तन-किये वेद के चार विभाजन रचनाकार महाभारत के-एवम् अष्टादश पुराण के

दोहा

सब विद्याओं में निपुण, दैत्यों के आचार्य ।
बुद्धिमान पण्डित महा, कविवर शुक्राचार्य ।।
विद्या संजीवनी अरु, शुक्रनीति विद्वान ।
वह विभूति मेरी तथा, उशना नाम महान ।।

दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगाषताम् ।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्॥३८॥

मैं दमन करने वालों का दण्ड अर्थात् दमन करने की शक्ति हूँ। विजय की इच्छावालों में नीति मैं हूँ। गोपनीय भावों में मौन मैं हूँ और ज्ञानवानों में ज्ञान मैं ही हूँ। कुमार्ग से दुष्ट को हटाना-सत्कर्मों में उसे लगाना दमन नीति ऐसी है जिनकी-दण्ड क्रिया मैं ही हूँ उनकी नीति परायण जो होता है-वह सच्चा विजयी होता है करती स्थिर विजय नीति ही-अतः नीति मेरी विभूति ही गोपनीयता में अति सक्षम-मैं ही मौन क्रिया हूँ उत्तम कोई ज्ञान कला कौशल भी-है मेरी विभूति ही वह भी

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से

लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्, दिल्ली-110035

माघ कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् २०७३
१६ जनवरी से ३१ जनवरी २०१७ ई. तक

सूर्य उत्तरायण — शिशिर ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
सोमवार	चतुर्थी	पूर्वाफाल्गुनी	३	16	
मंगलवार	पञ्चमी	उत्तराफाल्गुनी	४	17	
बुधवार	षष्ठी	हस्त	५	18	स्वामी रामानन्दाचार्य जयन्ती
गुरुवार	सप्तमी	चित्रा	६	19	
शुक्रवार	अष्टमी	स्वाति	७	20	
शनिवार	नवमी	स्वाति	८	21	
रविवार	दशमी	विशाखा	९	22	
सोमवार	एकादशी	अनुराधा	१०	23	षटतिला एकादशी व्रत, नेताजी सुभाष चन्द्रबोस जयन्ती
मंगलवार	द्वादशी	ज्येष्ठा	११	24	तिल द्वादशी
बुधवार	त्रयोदशी	मूल	१२	25	प्रदोष व्रत
गुरुवार	चतुर्दशी	पूर्वाषाढ़	१३	26	भारतीय गणतंत्र दिवस
शुक्रवार	अमावस्या	उत्तराषाढ़	१४	27	मौनी अमावस्या
शनिवार	प्रतिपदा	श्रवण	१५	28	लाला लाजपत राय जयंती
रविवार	द्वितीया	धनिष्ठा	१६	29	पंचक प्रारम्भ 10.54 से, बाबा लाल दयाल जयंती
सोमवार	तृतीया	शतभिषा	१७	30	
मंगलवार	चतुर्थी	पूर्वाभाद्रपद	१८	31	अंगारकी चतुर्थी व्रत

श्री अष्टावक्र गीता (जनक उवाच)

अन्तर्विकल्पशून्यस्य बहिः स्वच्छन्दचारिणः ।
भ्रान्तस्येव दशास्तास्तादृशा एव जानते ॥४॥ १४

"जिसका अन्त:करण विकल्प से शून्य है तथा बाहरी जगत में वह भ्रान्त-पुरुष की भांति व्यवहार करता है, उस व्यक्ति की उन-उन दशाओं को वैसी ही दशा वाले पुरुष जानते हैं।"

यथातथोपदेशेन कृतार्थः सत्त्वबुद्धिमान् ।
आजीवमपि जिज्ञासुः परस्तत्र विमुह्यति ॥१॥ १५

"सत्त्वबुद्धि वाला पुरुष जैसे तैसे (अर्थात् थोड़े से) उपदेश से ही कृतार्थ हो जाता है। और दूसरा (असत् बुद्धि वाल पुरुष) तो जीवनपर्यनत जिज्ञासु होता हुआ भी मोह को प्राप्त होता है।"

विहिप-केन्द्रीय प्रन्यासी मण्डल एवं प्रबंध समिति संयुक्त बैठक

मां उमिया धाम, भण्डारा रोड, नागपुर

दि. 29-31 दिसम्बर 2016

प्रस्ताव क्र 02

विषय : समान नागरिक संहिता

दुनिया के अधिकांश देशों में समान नागरिक कानून लागू है, इनमें अनेक इस्लामिक देश भी शामिल हैं। विश्व हिन्दू परिषद् के प्रन्यासी मण्डल व प्रबंध समिति का यह स्पष्ट अभिमत है कि समान नागरिक संहिता लागू करना भारत की अखण्डता, सार्वभौमिकता व साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए परम आवश्यक है। भारत के संविधान निर्माताओं ने 'एक राष्ट्र एक कानून' की बात की थी परन्तु अभी तक इसे लागू न कर पाना संविधान, न्याय पालिका और मानवीय जीवन मूल्यों का अपमान तो है ही, साथ ही, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे संविधान निर्माताओं की मूल भावना का भी निरादर है।

समान नागरिक संहिता की बात तो दूर, तुष्टिकरण की नीति के चलते कथित पंथ निरपेक्ष सरकारों ने भारतीय दंड संहिता को भी समान नहीं रहने दिया शाहबानो मामले में भारतीय दण्ड संहिता की धारा 125 के तहत जो निर्णय हुआ उसे भी संसद के एक कानून द्वारा निरस्त कर भारतीय महिलाओं के एक वर्ग को इनके अधिकारों से वंचित कर दिया गया। जब भी न्याय पालिका या किसी पीड़ित मुस्लिम महिला की ओर से समान नागरिक संहिता कानून बनाने की बात की जाती है तभी, कुछ लोग कुतर्क देकर इस आवाज को दबाने का षड़यंत्र करते हैं। कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि भारत में बहुलतावादी संस्कृति है। सब को अपने धर्मों को मानने का अधिकार है। वहीं, कुछ लोग कहते हैं कि मुस्लिम समाज की सहमति के बिना ये नहीं होना चाहिए। मुस्लिम समाज का एक वर्ग इसको शरीयत में सीधे-सीधे हस्तक्षेप मानता है। विश्व हिन्दू परिषद् का प्रन्यासी मण्डल व प्रबंध समिति इन तीनों ही कुतर्कों का पुरजोर खण्डन करती है। इनको समझना चाहिए कि रीति रिवाज 'धर्म' नहीं होते। कुछ कुरीतियों को बदलने का मतलब धर्म में हस्तक्षेप नहीं होता। भारत में जितने भी कानून बनते हैं, वे कभी भी सम्बन्धित समाज के जनमत संग्रह के द्वारा नहीं बनते हैं। अपितु, देश और समाज की आवश्यकता के अनुसार बनते हैं। किसी भी कुरीति का यह कहकर समर्थन नहीं किया जा सकता कि वह किसी के धर्म ग्रंथों में दी गई है। यह देश का दुर्भाग्य है कि बहुलता का तर्क देने वाले केवल मुस्लिम समाज का विषय आने पर ही यह तर्क देते हैं। जबकि, हिन्दू समाज की किसी कथित परम्परा में संविधान या न्याय पालिका के द्वारा परिवर्तन किया गया तब इनका बहुलता का तर्क कहीं खो जाता है।

भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्त्वों के अंतर्गत अनुच्छेद 44 में भी सभी के लिए निजी कानून एक जैसे हों, इस हेतु सरकार को सम्पूर्ण देश में समान नागरिक कानून के लिए निर्देश दिया गया हैं। मई 1995 में भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने महिलाओं पर अत्याचार रोकने तथा राष्ट्रीय एकता हेतु इसे अनिवार्य रूप से लागू करने पर जोर देते हुए कहा था कि किसी समुदाय में इस तरह के निजी कानून स्वतंत्रता नहीं बल्कि अत्याचार के प्रतीक हैं। समान नागरिक संहिता के अभाव में जिहादियों की पृथकतावादी वृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है। उनको अपने जिहादी एजेण्डे को लागू करने के लिये किसी भी बाधा की चिंता नहीं रहती। इसी कारण उनकी जनसंख्या वृद्धि विस्फोटक सीमा तक पहुंच चुकी है। भारत के जिन स्थानों में जनसंख्या संतुलन बिगड़ा है वहां हिन्दू समाज का अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है। आसाम, प0 बंगाल, बिहार, केरल, कश्मीर तथा उत्तर प्रदेश आदि के कई जिलों में केवल हिन्दू समाज ही नहीं, प्रशासन भी लाचार होता जा रहा है। केवल समान आचार संहिता ही जनसंख्या असंतुलन और जनसंख्या विस्फोट को रोक सकती है।

भारतीय संविधान समतावादी संविधान है यहां किसी भी समुदाय के साथ भेदभाव नहीं किया जाता, एक पंथ निरपेक्ष राष्ट्र होने के कारण से यहां साम्प्रदायिक आधार पर भेदभाव का प्रश्न ही पैदा नहीं होता सबको समान दर्जे

के नागरिक के रूप में भारत का संविधान स्वीकार करता है इसलिए एक मुस्लिम चिन्तक हमीद दलवई ने कहा था ''जो भारत में समान नागरिक कानून स्वीकार नहीं करते उन्हें दूसरे दर्जे की नागरिकता के लिए तैयार रहना चाहिए''।

हाल में ही, मा. सर्वोच्च न्यायालय व इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने मुस्लिम महिलाओं के तीन तलाक, बहु-विवाह, भरण पोषण से मनाही और हलाला जैसी बर्बर परम्पराओं पर सम्बन्धित पक्षों से जब राय ली तो मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और 'सेक्यूलर' नेताओं ने मा. न्यायालय की कार्यवाही का राजनीतिकरण तथा सम्प्रदायिकीकरण करते हुए देश को तोड़ने की धमकी तक दे डाली। इसी धमकी का परिणाम बारा बफात/मिलाद्-उन-नवी के जुलूसों में देशभर में स्पष्ट दिखाई दिया। प0 बंगाल, केरल, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान इत्यादि अनेक राज्यों में इस दौरान हिन्दू धर्म स्थलों व बस्तियों में जो हमले हुये वे दुनिया ने देखे। इसके बाद कश्मीर घाटी के अलगाववादी जो अभी तक कश्मीरियत का हवाला दिया करते थे, अब वे घाटी के 'इस्लामी स्वरूप' को न बदलने देने की चुनौती देने लगे हैं। अब इलाहाबाद व केरल उच्च न्यायालय ने भी, मुसलमानों में, महिलाओं के सन्दर्भ में जो बर्बर कानून हैं, उनसे मुक्ति दिलाने की बात कही है। मद्रास उच्च न्यायालय ने तो शरीयत कोर्ट पर ही प्रतिबंध लगा दिया। मुस्लिम समाज में पहली बार सुधार आन्दोलन की हवा दिखाई दे रही है। मुस्लिम महिलाएं इन सुधारों के पक्ष में हैं। कुछ प्रबुद्ध मुस्लिम पुरुष भी इन परिवर्तनों का स्वागत कर रहे हैं। विश्व हिन्दू परिषद् का मानना है कि परिवर्तन की ये लहर प्रबल बनेगी और मुस्लिम महिलाओं का इन बर्बर परम्पराओं के आधार पर शोषण नहीं हो सकेगा।

गोवा में समान नागरिक संहिता अनेक वर्षों से लागू होने के बावजूद आज तक वहां कोई समस्या नहीं हुई। फिर भी, शेष भारत में स्वतंत्रता के 69 वर्षों के उपरान्त भी यह लागू नहीं हो सका, यह चिन्तनीय है। विश्व हिन्दू परिषद् प्रन्यासी मण्डल व प्रबंध समिति केंद्र सरकार से मांग करती है कि देश में सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक कानून अविलम्ब लागू कर देश की एकता, मानवाधिकारों की सुरक्षा, महिला उत्पीड़न पर अंकुश तथा कानून व संविधान के प्रति सभी की प्रतिबद्धता सुनिश्चित करे।

अनुमोदन तिथि : पौष शुक्ल प्रथमा, सम्वत् 2073

प्रस्तावक : **डॉ० सुरेन्द्र जैन** - रोहतक

30 दिसम्बर 2016

अनुमोदक : **मधुकर राव दीक्षित** - गोवा

मुस्लिम ने निकाह के शादी कार्ड पर छपवाई गणेशजी की फोटो

झाबुआ। शादी हर शख्स के लिए जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पल होता है। लोग इसे अलग-अलग तरीके से जीवन का सबसे बेहतरीन पल बनाने की कोशिश करते हैं, लेकिन एक शख्स ने शादी के कार्ड के जरिए ऐसी मिसाल दी है जिसकी काफी चर्चाएं हैं। झाबुआ के स्थानीय निवासी अब्दुल रहीम मंसूरी उर्फ अब्बू दादा के बेटे मोहम्मद जुनैद की 14 दिसंबर को शादी हुई। अब्बू दादा ने अपने बेटे की शादी पर एकता और देशभक्ति से जुड़े स्लोगन छपवाए। शादी के कार्ड में हिंदुओं के प्रथम पूज्य गणेशजी को पहले स्थान दिया गया है, इसके बाद इस्लाम के प्रतीक सितारे को अंकित किया गया है। साथ ही कार्ड में भारत को स्वच्छ बनाने की अपील के साथ ही भ्रष्टाचार को मिटाने की अपील भी की गई है। कार्ड में दो हिन्दू दोस्तों का नाम भी लिखा गया है। कार्ड पर अलग-अलग हैं धर्म-मजहब, अलग-अलग सब रस्में हैं, अलग-अलग है भाषा-बोली, अलग-अलग सब कस्मे हैं, कौमी तिरंगे के नीचे सारे एक समान हैं, प्यारा हिंदुस्तान हमारा, प्यारा हिंदुस्तान हमारा... लिखकर भी लोगों को एकता में अनेकता का संदेश देने की कोशिश की गई है। अब्बू दादा का कहना है कि मजहब कोई भी हो वो बैर रखना नहीं सिखाता है। उन्होंने बताया कि इसी बात को ध्यान में रखकर उन्होंने ये शादी का कार्ड छपवाया है और इस पर देशभक्ति से जुड़े स्लोगन छपवाएं हैं। अब्बू के मित्रों का कहना है कि वे हमेशा से ही सभी धर्मों के आयोजनों में भाग लेते आए हैं। हालांकि ऐसा कार्ड उन्होंने पहली बार देखा है। -राजस्थान पत्रिका

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ था। बोस के पिता का नाम 'जानकीनाथ बोस' और माँ का नाम 'प्रभावती' था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वकील थे। प्रभावती और जानकीनाथ बोस की कुल मिलाकर 14 संतानें थी, जिसमें 6 बेटियाँ और 8 बेटे थे। सुभाष चंद्र उनकी नौवीं संतान और पाँचवें बेटे थे। अपने सभी भाइयों में से सुभाष को सबसे अधिक लगाव शरदचंद्र से था।

नेताजी ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई कटक के रेवेंशॉव कॉलेजिएट स्कूल में हुई। तत्पश्चात् उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेजिडेंसी कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई, और बाद में भारतीय प्रशासनिक सेवा (इण्डियन सिविल सर्विस) की तैयारी के लिए उनके माता-पिता ने बोस को इंग्लैंड के केंब्रिज विश्वविद्यालय भेज दिया। अँग्रेजी शासन काल में भारतीयों के लिए सिविल सर्विस में जाना बहुत कठिन था किंतु उन्होंने सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया।

1921 में भारत में बढ़ती राजनीतिक गतिविधियों का समाचार पाकर बोस ने अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली और शीघ्र भारत लौट आए। सिविल सर्विस छोड़ने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए। सुभाष चंद्र बोस महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों से सहमत नहीं थे। वास्तव में महात्मा गांधी उदार दल का नेतृत्व करते थे, वहीं सुभाष चंद्र बोस जोशीले क्रांतिकारी दल के प्रिय थे। महात्मा गाँधी और सुभाष चंद्र बोस के विचार भिन्न-भिन्न थे लेकिन वे यह अच्छी तरह जानते थे कि महात्मा गाँधी और उनका मकसद एक है, यानी देश की आजादी। सबसे पहले गाँधीजी को राष्ट्रपिता कह कर नेताजी ने ही संबोधित किया था।

1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद उन्होंने राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया। यह नीति गाँधीवादी आर्थिक विचारों के अनुकूल नहीं थी। 1939 में बोस पुन एक गाँधीवादी प्रतिद्वंदी को हराकर विजयी हुए। गांधी ने इसे अपनी हार के रुप में लिया। उनके अध्यक्ष चुने जाने पर गांधी जी ने कहा कि बोस की जीत मेरी हार है और ऐसा लगने लगा कि वह कांग्रेस वर्किंग कमिटी से त्यागपत्र दे देंगे। गाँधी जी के विरोध के चलते इस 'विद्रोही अध्यक्ष' ने त्यागपत्र देने की आवश्यकता महसूस की। गांधी के लगातार विरोध को देखते हुए उन्होंने स्वयं कांग्रेस छोड़ दी।

इस बीच दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया। बोस का मानना था कि अंग्रेजों के दुश्मनों से मिलकर आजादी हासिल की जा सकती है। उनके विचारों के देखते हुए उन्हें ब्रिटिश सरकार ने कोलकाता में नजरबंद कर लिया लेकिन वह अपने भतीजे शिशिर कुमार बोस की सहायता से वहां से भाग निकले। वह अफगानिस्तान और सोवियत संघ होते हुए जर्मनी जा पहुंचे।

सक्रिय राजनीति में आने से पहले नेताजी ने पूरी दुनिया का भ्रमण किया। वह 1933 से 36 तक यूरोप में रहे। यूरोप में यह दौर था हिटलर के नाजीवाद और मुसोलिनी के फासीवाद का। नाजीवाद और फासीवाद का निशाना इंग्लैंड था, जिसने पहले विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी पर एकतरफा समझौते थोपे थे। वे उसका बदला इंग्लैंड से लेना चाहते थे। भारत पर भी अँग्रेजों का कब्जा था और इंग्लैंड के खिलाफ लड़ाई में नेताजी को हिटलर और मुसोलिनी में भविष्य का मित्र दिखाई पड़ रहा था। दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। उनका मानना था कि स्वतंत्रता हासिल करने के लिए राजनीतिक गतिविधियों के साथ-साथ कूटनीतिक और सैन्य सहयोग की भी जरूरत पड़ती है।

सुभाष चंद्र बोस ने 1937 में अपनी सेक्रेटरी और ऑस्ट्रियन युवती एमिली से शादी की। उन दोनों की एक अनीता नाम की एक बेटी भी हुई जो वर्तमान में जर्मनी

में सपरिवार रहती हैं। नेताजी हिटलर से मिले। उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत और देश की आजादी के लिए कई काम किए। उन्होंने 1943 में जर्मनी छोड़ दिया। वहां से वह जापान पहुंचे। जापान से वह सिंगापुर पहुंचे। जहां उन्होंने कैप्टन मोहन सिंह द्वारा स्थापित आजाद हिंद फौज की कमान अपने हाथों में ले ली। उस वक्त रास बिहारी बोस आजाद हिंद फौज के नेता थे। उन्होंने आजाद हिंद फौज का पुनर्गठन किया। महिलाओं के लिए रानी झांसी रेजिमेंट का भी गठन किया जिसकी लक्ष्मी सहगल कैप्टन बनी।

'नेताजी' के नाम से प्रसिद्ध सुभाष चन्द्र ने सशक्त क्रान्ति द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से 21 अक्टूबर, 1943 को 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना की तथा 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया इस संगठन के प्रतीक चिह्न पर एक झंडे पर दहाड़ते हुए बाघ का चित्र बना होता था। नेताजी अपनी आजाद हिंद फौज के साथ 4 जुलाई 1944 को बर्मा पहुँचे। यहीं पर उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' दिया।

18 अगस्त 1945 को टोक्यो (जापान) जाते समय ताइवान के पास नेताजी का एक हवाई दुर्घटना में निधन हुआ बताया जाता है, लेकिन उनका शव नहीं मिल पाया। नेताजी की मौत के कारणों पर आज भी विवाद बना हुआ है।

सुभास चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे, जिनकी निडर देशभक्ति ने उन्हें देश का हीरो बनाया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिन्द फौज का गठन किया था।

बाद में सम्माननीय नेताजी ने पहले जर्मनी की सहायता लेते हुए जर्मन में ही विशेष भारतीय सैनिक कार्यालय की स्थापना बर्लिन में 1942 के प्रारम्भ में की, जिसका 1990 में भी उपयोग किया गया था।

शुरू में 1920 के अंत में बोस राष्ट्रीय युवा कांग्रेस के उग्र नेता थे एवं 1938 और 1939 को वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने। लेकिन बाद में कुछ समय बाद ही 1939 में उन्हें महात्मा गांधी से चले विवाद के कारण अपने पद को छोडना पड़ा। लेकिन 1940 में भारत छोड़ने से पहले ही उन्हें ब्रिटिश ने अपने गिरफ्त में कर लिया था। अप्रैल 1941 को बोस को जर्मनी लाया गया, जहा उन्हें भारतीय स्वतंत्रता अभियान की बागडोर संभाली और भारत को आजादी दिलाने के लिये लोगो को एकजुट करने लगे और एकता के सूत्र में बांधने लगे।

नवंबर 1941 में, जर्मन पैसों से ही उन्होंने बर्लिन में इंडिया सेंटर की स्थापना की और कुछ ही दिनों बाद फ्री इंडिया रेडियो की भी स्थापना की, जिस पर रोज रात को बोस अपना कार्यक्रम किया करते। तकरीबन 3000 मजबूत स्वयं सेवी सैनिकों ने इरविन रोमेल्स द्वारा हथियाए अफ्रीका कॉर्प्स को अपने कब्जे में किया। बाद में बोस को जर्मन से बहुत सहायता मिली और उन्होंने भारत के लिये जर्मन जमीन का भी उपयोग किया। इसी दौरान बोस पिता भी बने, उनकी पत्नी और सहयोगी एमिली स्किनल, जिनसे वे 1934 में मिले थे, उन्होंने एक बच्ची को जन्म दिया। 1942 की बसंत से, जापानियों ने दक्षिणी एशिया को हथिया लिया था और वे जर्मन प्राथमिकताओं को बदलने लगे थे, बाद में भारत पर हुआ जर्मन हमला असहनीय बनता गया।

इसे देखते हुए बोस ने दक्षिणी एशिया जाने का निर्णय लिया। अडोल्फ हिटलर उसी समय 1942 के अंत में बोस से मिले थे और उन्होंने भी बोस को दक्षिणी एशिया जाने की सलाह दी और पनडुब्बी लेने की भी सलाह दी। बोस ने अच्छी तरह से एक्सिस ताकत को जान लिया था और खेदसूचक ढंग से वह ज्यादा देर तक नही टिक पाई। फरवरी 1943 में बोस जर्मन पनडुब्बियों पर पहुँचे। मैडागास्कर में, उन्हें जापानीज पनडुब्बी में स्थानांतरित किया गया, जहाँ मई 1943 में वे जापानीज स्थान सुमात्रा में उतरे।

जापानियों की सहायता से ही सुभाष चंद्र बोस ने इंडियन नेशनल आर्मी (INA) का पुनर्निर्माण किया। जिसमें ब्रिटिश इंडियन आर्मी के भारतीय सैनिक भी शामिल थे, जिन्होंने सिंगापुर युद्ध में महान कार्य किया था। इस तरह बोस के आने से मलेशिया और सिंगापुर में भारतीय नागरीकों की संख्या बढ़ने लगी। बोस के नेतृत्व में जापानीज भारतीय सरकार को विभिन्न क्षेत्रों में सहायता

करने के लिये राजी हुए, जैसे की उन्होंने बर्मा की सहायता की थी और साथ ही जैसा साथ उन्होंने फिलीपींस और मांचुकुओ का दिया था, उन्होंने भारत की अस्थाई सरकार, जिसे बोस प्रतिपादित कर रहे थे, की स्थापना जापानीयों के साथ मिलकर अंडमान और निकोबर में की। बोस अच्छी तरह से अपनी सेना का नेतृत्व कर रहे थे- उनमे काफी करिश्माई ताकत समायी थी, इसी के चलते उन्होंने प्रसिद्ध भारतीय नारे 'जय हिन्द' की घोषणा की और उसे अपनी आर्मी का नारा बनाया। उनके नेतृत्व में निर्मित इंडियन नेशनल आर्मी एकता और समाजसेवा की भावना से बनी थी। उनकी सेना में भेदभाव और धर्मभेद की जरा भी भावना नही थी। इसे देखते हुए जापानियों ने बोस को अकुशल सैनिक बताया और इसी वजह से वे अपनी आर्मी को ज्यादा समय तक नही टिका पाये। 1944 के अंत में और 1945 के प्रारम्भ में ब्रिटिश इंडियन आर्मी पहले तो रुकी थी लेकिन बाद में उन्होंने पुनः भारत पर आक्रमण किया जिसमें लगभग आधी जापानी शक्ति और इंडियन नेशनल आर्मी में शामिल आधे जापानी सैनिक मारे गए। बाद में इंडियन नेशनल आर्मी मलय पेनिनसुला गयी जहाँ सिंगापुर में उन्हें देखा गया था और उन्होंने स्वयं ही खुद को जापानियों के हवाले कर दिया था। बोस ने पहले जापानियों के डर से आत्मसमर्पण का निर्णय नही लिया था, बल्कि उन्होंने भागकर मंचूरिया जाने की बजाय सोवियत संघ के भविष्य के लिये आत्मसमर्पण करने की ठानी। ताइवान में हुए विमान अपघात में उनकी मृत्यु हो गयी थी, लेकिन आज भी बहुत से भारतीयों को इस बात पर विश्वास नही की उनका विमान हादसा वास्तव में हुआ था भी या नही। उस समय हादसे के बाद भी भारतीय बंगाल प्रान्त के लोगों को भरोसा था की बोस भारत की आजादी के लिये दोबारा आएंगे।

रंगून के 'जुबली हॉल' में सुभाष चंद्र बोस द्वारा दिया गया वह भाषण सदैव के लिए इतिहास के पन्नों में अंकित हो गया, जिसमें उन्होंने कहा था कि- 'स्वतंत्रता बलिदान चाहती है। आपने आजादी के लिए बहुत त्याग किया है, किन्तु अभी प्राणों की आहुति देना शेष है। आजादी को आज अपने शीश फूल चढ़ा देने वाले पागल पुजारियों की आवश्यकता है। ऐसे नौजवानों की आवश्यकता है, जो अपना सिर काट कर स्वाधीनता देवी को भेंट चढ़ा सकें। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' इस वाक्य के जवाब में नौजवानों ने कहा- 'हम अपना खून देंगे' उन्होंने आईएनए को 'दिल्ली चलो' का नारा भी दिया। सुभाष भारतीयता की पहचान ही बन गए थे और भारतीय युवक आज भी उनसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं। वे भारत की अमूल्य निधि थे। 'जय हिन्द' का नारा और अभिवादन उन्हीं की देन है।

सुभाष चंद्र बोस के ये घोषवाक्य आज भी हमें रोमांचित करते है। यही एक वाक्य सिद्ध करता है कि जिस व्यक्तित्व ने इसे देश हित में सबके सामने रखा वह किस जीवन का व्यक्ति होगा।

'इंडियन नेशनल आर्मी' के संस्थापक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु पर इतने वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी रहस्य छाया हुआ है। सुभाषचंद्र बोस की मृत्यु हवाई दुर्घटना में मानी जाती है। समय गुजरने के साथ ही भारत में भी अधिकांश लोग ये मानते है कि नेताजी की मौत ताईपे में विमान हादसे में हुई, कहा जाता है की 18 अगस्त 1945 को यह हादसा ताइवान में हुआ था। लेकिन फिर भी बहुत से लोगों को इस बात पर भरोसा नही था।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस सर्वकालिक नेता थे, जिनकी जरूरत कल थी, आज है और आने वाले कल में भी होगी। वह ऐसे वीर सैनिक थे, इतिहास जिनकी गाथा गाता रहेगा। उनके विचार, कर्म और आदर्श अपना कर राष्ट्र वह सब कुछ हासिल कर सकता है, जिसका वह हकदार है। सुभाष चंद्र बोस स्वतंत्रता समर के अमर सेनानी, मां भारती के सच्चे सपूत थे। नेताजी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के उन योद्धाओं में से एक थे, जिनका नाम और जीवन आज भी करोड़ों देशवासियों को मातृभमि के लिए समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा देता है। उनमें नेतृत्व के चमत्कारिक गुण थे, जिनके बल पर उन्होंने आजाद हिंद फौज की कमान संभाल कर अंग्रेजों को भारत से निकाल बाहर करने के लिए एक मजबूत सशस्त्र प्रतिरोध खड़ा करने में सफलता हासिल की थी। नेताजी के जीवन से यह भी सीखने को मिलता है कि हम देश सेवा से ही जन्मदायिनी मिट्टी का कर्ज उतार

शेष पृष्ठ 22 पर....

26 जनवरी-गणतन्त्र दिवस

मातृभूमि के सम्मान एवं उसकी आजादी के लिये असंख्य वीरों ने अपने जीवन की आहुति दी थी। देशभक्तों की गाथाओं से भारतीय इतिहास के पृष्ठ भरे हुए हैं। देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हजारों की संख्या में भारत माता के वीर सपूतों ने, भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। ऐसे ही महान देशभक्तों के त्याग और बलिदान के परिणाम स्वरूप हमारा देश, गणतान्त्रिक देश हो सका।

गणतन्त्र का अर्थ है, जनता के द्वारा जनता के लिये शासन। इस व्यवस्था को हम सभी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। वैसे तो भारत में सभी पर्व बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं, परन्तु गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं। इस पर्व का महत्त्व इसलिये भी बढ़ जाता है क्योंकि इसे सभी जाति एवं वर्ग के लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं।

गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी को ही क्यों मनाते हैं? मित्रों, जब अंग्रेज सरकार की मंशा भारत को एक स्वतंत्र उपनिवेश बनाने की नजर नही आ रही थी, तभी 26 जनवरी 1929 के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरु जी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने पूर्णस्वराज्य की शपथ ली। पूर्ण स्वराज के अभियान को पूरा करने के लिये सभी आंदोलन तेज कर दिये गये थे। सभी देशभक्तों ने अपने-अपने तरीके से आजादी के लिये कमर कस ली थी। एकता में बल है, की भावना को चरितार्थ करती विचारधारा में अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ा। अंततोगत्वा 1947 को भारत आजाद हुआ, तभी यह निर्णय लिया गया कि 26 जनवरी 1929 की निर्णनायक तिथी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनायेंगे।

26 जनवरी, 1950 भारतीय इतिहास में इसलिये भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भारत का संविधान, इसी दिन अस्तित्व में आया और भारत वास्तव में एक संप्रभु देश बना। भारत का संविधान लिखित एवं सबसे बड़ा संविधान है। संविधान निर्माण की प्रक्रिया में 2 वर्ष, 11 महीना, 18 दिन लगे थे। भारतीय संविधान के वास्तुकार, भारत रत्न से अलंकृत डॉ. भीमराव अम्बेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने विश्व के अनेक संविधानों के अच्छे लक्षणों को अपने संविधान में आत्मसात करने का प्रयास किया है। इस दिन भारत एक सम्पूर्ण गणतान्त्रिक देश बन गया। देश को गौरवशाली गणतन्त्र राष्ट्र बनाने में जिन देशभक्तों ने अपना बलिदान दिया उन्हें याद करके, भावांजली देने का पर्व है, 26 जनवरी।

भारत से व्यपार का इरादा लेकर अंग्रेज भारत आये थे, लेकिन धीरे-धीरे उन्होने यहाँ के राजाओं और सामंतो पर अपनी कूटनीति चालों से अधिकार कर लिया। आजादी कि पहली आग मंगल पांडे ने 1857 में कोलकता के पास बैरकपुर में जलाई थी, किन्तु कुछ संचार संसाधनों की कमी से ये आग ज्वाला न बन सकी परन्तु, इस आग की चिंगारी कभी बुझी न थी। लक्ष्मीबाई से इंदिरा गाँधी तक, मंगल पांडे से सुभाष तक, नाना साहेब से सरदार पटेल तक, लाल (लाला लाजपत राय), बाल (बाल गंगाधर तिलक), पाल (विपिन्द्र चन्द्र पाल) हों या गोपाल, गाँधी, नेहरु सभी के हृदय में धधक रही थी। 13 अप्रैल 1919 की (जलियाँ वाला बाग) घटना, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सबसे अधिक दुखदाई घटना थी। जब जनरल डायर के नेतृत्व में अंग्रेजी फौज ने गोलियां चला के निहत्थे, शांत बूढ़ों, महिलाओं और बच्चों सहित सैकड़ों लोगों को मार डाला था और हजारों लोगों को घायल कर दिया था। यही वह घटना थी जिसने भगत सिंह और उधम सिंह जैसे, क्रांतिकारियों को जन्म दिया। अहिंसा के पुजारी हों या क्रान्तिकारी विचारक, सभी का हृदय आजादी की आग से जलने लगा। हर वर्ग

शेष पृष्ठ 15 पर....

लाला लाजपत राय

लाला लाजपत राय (जन्म: 28 जनवरी, 1865 ई. - मृत्यु: 17 नवंबर, 1928 ई., लाहौर) को भारत के महान क्रांतिकारियों में गिना जाता है। आजीवन ब्रिटिश राजशक्ति का सामना करते हुए अपने प्राणों की परवाह न करने वाले लाला लाजपत राय को 'पंजाब केसरी' भी कहा जाता है। लालाजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गरम दल के प्रमुख नेता तथा पूरे पंजाब के प्रतिनिधि थे। उन्हें 'पंजाब के शेर' की उपाधि भी मिली थी। उन्होंने कानून की शिक्षा प्राप्त कर हिसार में वकालत प्रारम्भ की थी, किन्तु बाद में स्वामी दयानंद के सम्पर्क में आने के कारण वे आर्य समाज के प्रबल समर्थक बन गये। यहीं से उनमें उग्र राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई। लालाजी को पंजाब में वही स्थान प्राप्त है, जो महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक को प्राप्त है।

जन्म

लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी, 1865 ई. को अपने ननिहाल के ग्राम ढुंढिके, जिला फरीदकोट, पंजाब में हुआ था। उनके पिता लाला राधाकृष्ण लुधियाना जिले के जगराँव कस्बे के निवासी अग्रवाल वैश्य थे। लाला राधाकृष्ण अध्यापक थे। वे उर्दू तथा फारसी के अच्छे जानकार थे। इसके साथ ही इस्लाम के मन्तव्यों में भी उनकी गहरी आस्था थी। वे मुसलमानी धार्मिक अनुष्ठानों का भी नियमित रूप से पालन करते थे। नमाज पढ़ना और रमजान के महीने में रोजा रखना उनकी जीनवचर्या का अभिन्न अंग था, यथापि वे सच्चे धर्म-जिज्ञासु थे। अपने पुत्र लाला लाजपत राय के आर्य समाजी बन जाने पर उन्होंने वेद के दार्शनिक सिद्धान्त को समझने में भी रुचि दिखाई। पिता की इस जिज्ञासु प्रवृति का प्रभाव उनके पुत्र लाजपत राय पर भी पड़ा था। लाजपत राय के पिता वैश्य थे, किंतु उनकी माता सिक्ख परिवार से थी। दोनों के धार्मिक विचार भिन्न-भिन्न थे। इनकी माता एक साधारण महिला थीं। वे एक हिन्दू नारी की तरह ही अपने पति की सेवा करती थीं।

शिक्षा

लाजपत राय की शिक्षा पाँचवें वर्ष में आरम्भ हुई। सन् 1880 में उन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एंट्रेंस की परीक्षा एक वर्ष में उत्तीर्ण की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर आ गए। यहाँ वे गर्वमेंट कॉलेज में प्रविष्ट हुए और 1882 में एफ.ए. की परीक्षा तथा मुख्तारी की परीक्षा साथ-साथ उत्तीर्ण की। यहीं वे आर्य समाज के सम्पर्क में आये और उसके सदस्य बन गये।

वकालत

लाला लाजपत राय ने एक मुख्तार (छोटा वकील) के रूप में अपने मूल निवास स्थल जगराँव में ही वकालत आरम्भ कर दी थी, किन्तु यह कस्बा बहुत छोटा था, जहाँ उनके कार्य के बढ़ने की अधिक सम्भावना नहीं थी। अत: वे रोहतक चले गये। उन दिनों पंजाब प्रदेश में वर्तमान हरियाणा, हिमाचल तथा आज के पाकिस्तानी पंजाब का भी समावेश था। रोहतक में रहते हुए ही उन्होंने 1885 ई. में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1886 में वे हिसार आए। एक सफल वकील के रूप में 1892 तक वे यहीं रहे और इसी वर्ष लाहौर आये। तब से लाहौर ही उनकी सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया।

आर्य समाज में प्रवेश

सन् 1882 के अंतिम दिनों में लाजपत राय पहली बार आर्य समाज के लाहौर के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित हुए। इस मार्मिक प्रसंग का वर्णन लालाजी ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार किया है-

'उस दिन स्वर्गीय लाला मदनसिंह बी.ए. का व्याख्यान था। उनको मुझसे बहुत प्रेम था। उन्होंने व्याख्यान देने से पहले समाज मंदिर की छत पर मुझे अपना लिखा व्याख्यान सुनाया और मेरी सम्मति पूछी। मैंने उस व्याख्यान को बहुत पसन्द किया। जब मैं छत से नीचे उतरा तो

लाला साईंदासजी ने मुझे पकड़ लिया और अलग ले जाकर कहने लगे कि- 'हमने बहुत समय तक इन्तजार किया है कि तुम हमारे साथ मिल जाओ।' मैं उस घड़ी को भूल नहीं सकता। वह मुझसे बातें करते थे, मेरे मुँह की ओर देखते थे तथा प्यार से पीठ पर हाथ फेरते थे। मैंने उनको जवाब दिया कि-'मैं तो उनके साथ हूँ।' मेरा इतना कहना था कि उन्होंने फौरन समाज के सभासद बनने का प्रार्थना-पत्र मंगवाया और मेरे सामने रख दिया। मैं दो-चार मिनट तक सोचता रहा, परन्तु उन्होंने कहा कि- 'मैं तुम्हारे हस्ताक्षर लिए बिना तुम्हें जाने न दूँगा।' मैंने फौरन हस्ताक्षर कर दिए। उस समय उनके चेहरे पर प्रसन्नता की जो झलक थी, उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। ऐसा मालूम होता था कि उनको हिन्दुस्तान की बादशाहत मिल गयी है। उन्होंने एकदम पण्डित गुरुदत्त को बुलाया और सारा हाल सुनाकर मुझे उनके हवाले कर दिया। वह भी बहुत खुश हुए। लाला मदनसिंह के व्याख्यान की समाप्ति पर लाला साँईदास ने मुझे और पण्डित गुरुदत्त को मंच पर खड़ा कर किया। हम दोनों से व्याखान दिलवाये। लोग बहुत खुश हुए और खूब तालियाँ बजाई। इन तालियों ने मेरे दिल पर जादू का-सा असर किया। मैं प्रसन्नता और सफलता की मस्ती में झूमता हुआ अपने घर लौटा।' यह है लालाजी के आर्य समाज में प्रवेश की कथा।

डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना

लाला साँईदास आर्य समाज के प्रति इतने अधिक समर्पित थे कि वे होनहार नवयुवकों को इस संस्था में प्रविष्ट करने के लिए सदा तत्पर रहते थे। स्वामी श्रद्धानन्द, को आर्य समाज में लाने का श्रेय भी उन्हें ही है। 30 अक्टूबर, 1883 को जब अजमेर में स्वामी दयानन्द का देहान्त हो गया तो 9 नवम्बर, 1883 को लाहौर में आर्य समाज की ओर से एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा के अन्त में यह निश्चित हुआ कि स्वामी जी की स्मृति में एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाये, जिसमें वैदिक साहित्य, संस्कृति तथा हिन्दी की उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी और पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान में भी छात्रों को दक्षता प्राप्त कराई जाये। 1886 में जब इस शिक्षण संस्थान की स्थापना हुई तो आर्य समाज के अन्य नेताओं के साथ लाला लाजपत राय का भी इसके संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा तथा वे कालान्तर में डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर के महान स्तम्भ बने। पंजाब के 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज' की स्थापना के लिए लाजपत राय ने अथक प्रयास किये थे। स्वामी दयानन्द के साथ मिलकर उन्होंने आर्य समाज को पंजाब में लोकप्रिय बनाया था। आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता होने के नाते उन्होंने 'दयानंद कॉलेज' के लिए कोष इकट्ठा करने का काम भी किया। डी.ए.वी. कॉलेज पहले लाहौर में स्थापित किया था। लाला हंसराज के साथ 'दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालयों' (डी.ए.वी.) का प्रसार भी लालाजी ने किया। उनकी आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद एवं उनके कार्यों के प्रति अनन्य निष्ठा थी। स्वामी जी के देहावसान के बाद उन्होंने आर्य समाज के कार्यों को पूरा करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया था। हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष, प्राचीन और आधुनिक शिक्षा पद्धति में समन्वय, हिन्दी भाषा की श्रेष्ठता और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आर-पार की लड़ाई आर्य समाज से मिले संस्कारों के ही परिणाम थे।

आदर्श

इटली के क्रांतिकारी ज्यूसेपे मेत्सिनी को लाजपत राय अपना आदर्श मानते थे। किसी पुस्तक में उन्होंने जब मेत्सिनी का भाषण पढ़ा तो उससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मेत्सिनी की जीवनी पढ़नी चाही। वह भारत में उपलब्ध नहीं थी। उन्होंने उसे इंग्लैण्ड से मंगवाया। मेत्सिनी द्वारा लिखी गई अभूतपूर्व पुस्तक 'डयूटीज ऑफ मैन' का लाला लाजपत राय ने उर्दू में अनुवाद किया। इस पांडुलिपि को उन्होंने लाहौर के एक पत्रकार को पढ़ने के लिए दिया। उस पत्रकार ने उसमें थोड़ा बहुत संशोधन किया और अपने नाम से छपवा दिया।

कांग्रेस के कार्यकर्ता

लाला लाजपत राय जब हिसार में वकालत करते थे, तब उन्होंने कांग्रेस की बैठकों में भी भाग लेना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। 1892 में वे लाहौर चले गए। उनके हृदय में राष्ट्रीय भावना भी बचपन से ही अंकुरित हो उठी थी।

लाला लाजपत राय की प्रतिभा

1888 के कांग्रेस के 'प्रयाग सम्मेलन' में वे मात्र 23 वर्ष की आयु में शामिल हुए थे। कांग्रेस के 'लाहौर अधिवेशन' को सफल बनाने में लालाजी का ही हाथ था। वे 'हिसार नगर निगम' के सदस्य चुने गए थे और फिर बाद में सचिव भी चुन लिए गए।

समाज सेवी

लालाजी ने यों तो समाज सेवा का कार्य हिसार में रहते हुए ही आरम्भ कर दिया था, जहाँ उन्होंने लाला चंदूलाल, पण्डित लखपतराय और लाला चूड़ामणि जैसे आर्य समाजी कार्यकर्ताओं के साथ सामाजिक हित की योजनाओं के कार्यान्वयन में योगदान किया, किन्तु लाहौर आने पर वे आर्य समाज के अतिरिक्त राजनैतिक आन्दोलन के साथ भी जुड़ गये। 1888 में वे प्रथम बार कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे, जिसकी अध्यक्षता मि. जॉर्ज यूल ने की थी। 1897 और 1899 के देशव्यापी अकाल के समय लाजपत राय पीड़ितों की सेवा में जी जान से जुटे रहे। जब देश के कई हिस्सों में अकाल पड़ा तो लालाजी राहत कार्यों में सबसे अग्रिम मोर्चे पर दिखाई दिए। देश में आए भूकंप, अकाल के समय ब्रिटिश शासन ने कुछ नहीं किया। लाला जी ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर अनेक स्थानों पर अकाल में शिविर लगाकर लोगों की सेवा की। उनके व्यक्तित्व के बारे में तत्कालीन मशहूर अंग्रेज लेखक विन्सन ने लिखा था–

'लाजपत राय के सादगी और उदारता भरे जीवन की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। उन्होंने अशिक्षित गरीबों और असहायों की बड़ी सेवा की थी। इस क्षेत्र में अंग्रेजी सरकार बिल्कुल ध्यान नहीं देती थी।'

1901–1908 की अवधि में उन्हें फिर भूकम्प एवं अकाल पीड़ितों की मदद के लिए सामने आना पड़ा।

विदेश यात्रा

सन् 1906 में लाला लाजपत राय, गोपालकृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के एक शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैड गये। यहाँ से वे अमरीका चले गये। उन्होंने कई बार विदेश यात्राएँ कीं और वहाँ रहकर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत की राजनैतिक परिस्थिति की वास्तविकता से वहाँ के लोगों को परिचित कराया तथा उन्हें स्वाधीनता आन्दोलन की जानकारी दी।

कांग्रेस में उग्र विचारों का प्रवेश

लाला लाजपत राय ने अपने सहयोगियों–लोकमान्य तिलक तथा विपिनचन्द्र पाल के साथ मिलकर कांग्रेस में उग्र विचारों का प्रवेश कराया। 1885 में स्थापना से लेकर लगभग बीस वर्षों तक कांग्रेस ने एक राजभवन संस्था का चरित्र बनाये रखा था। इसके नेतागण वर्ष में एक बार बड़े दिन की छुट्टियों में देश के किसी नगर में एकत्रित होने और विनम्रतापूर्वक शासनों के सूत्रधारों से सरकारी उच्च सेवाओं में भारतीयों को अधिकाधिक संख्या में प्रविष्ट कराने का प्रयत्न करते थे। जब ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया तो लालाजी ने उनका डटकर विरोध किया। कांग्रेस के मंच ये यह अपनी किस्म का पहला तेजस्वी भाषण हुआ था, जिसमें देश की अस्मिता प्रकट हुई थी। 1907 में जब पंजाब के किसानों ने अपने अधिकारों को लेकर चेतना उत्पन्न हुई तो सरकार का क्रोध लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह पर उमड़ पड़ा और इन दोनों देशभक्त नेताओं को देश से निर्वासित कर उन्हें पड़ोसी देश बर्मा के मांडले नगर में नजरबंद कर दिया गया, किन्तु देशवासियों द्वारा सरकार के इस दमनपूर्ण कार्य का प्रबल विरोध किये जाने पर सरकार को अपना यह आदेश वापस लेना पड़ा। लालाजी पुनः स्वदेश आये और देशवासियों ने उनका जोरदार जोश से स्वागत किया।

बंगाल विभाजन का विरोध

लाला लाजपत राय ने देशभर में स्वदेशी वस्तुएँ अपनाने के लिए अभियान चलाया। अंग्रेजों ने जब 1905 में बंगाल का विभाजन कर दिया तो लालाजी ने सुरेंद्रनाथ बनर्जी और विपिनचंद्र पाल जैसे आंदोलनकारियों से हाथ मिला लिया और अंग्रेजों के इस फैसले का जमकर विरोध किया। 3 मई, 1907 को ब्रितानिया हुकूमत ने उन्हें रावलपिंडी में गिरफ्तार कर लिया। रिहा होने के बाद भी लालाजी आजादी के लिए लगातार संघर्ष करते रहे।

'लाजपत राय के सादगी और उदारता भरे जीवन की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। उन्होंने अशिक्षित गरीबों और असहायों की बड़ी सेवा की थी। इस क्षेत्र में अंग्रेजी सरकार बिल्कुल ध्यान नहीं देती थी।'– विन्सन

पुनः राजनैतिक आंदोलन

लालाजी को 1907 में 6 माह का निर्वासन सहना पड़ा था। वे कई बार इंग्लैंड गए, जहाँ उन्होंने भारत की स्थिति में सुधार के लिए अंग्रेजों से विचार-विमर्श किया था। 1907 के सूरत के प्रसिद्ध कांग्रेस अधिवेशन में लाला लाजपत राय ने अपने सहयोगियों के द्वारा राजनीति में गरम दल की विचारधारा का सूत्रपात कर दिया था और जनता को यह विश्वास दिलाने में सफल हो गये थे कि केवल प्रस्ताव पास करने और गिड़गिड़ाने से स्वतंत्रता मिलने वाली नहीं है। जनभावना को देखते हुए ही अंग्रेजों को उनके देश-निर्वासन को रद्द करना पड़ा था। निर्वासन के बाद वे स्वदेश आये और पुनः स्वाधीनता के संघर्ष में जुट गये। प्रथम विश्वयुद्ध (1914-1918) के दौरान वे एक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में पुनः इंग्लैंड गये और देश की आजादी के लिए प्रबल जनमत जागृत किया। वहाँ से वे जापान होते हुए अमरीका चले गये और स्वाधीनता-प्रेमी अमरीकावासियों के समक्ष भारत की स्वाधीनता का पक्ष प्रबलता से प्रस्तुत किया। यहाँ 'इण्डियन होमरूल लीग' की स्थापना की तथा कुछ ग्रन्थ भी लिखे।

लेखन कार्य

उन्होंने 'तरुण भारत' नामक एक देशप्रेम तथा नवजागृति से परिपूर्ण पुस्तक लिखी, जिसे ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था। उन्होंने 'यंग इंण्डिया' नामक मासिक पत्र भी निकाला। इसी दौरान उन्होंने 'भारत का इंग्लैंड पर ऋण', 'भारत के लिए आत्मनिर्णय' आदि पुस्तकें लिखीं, जो यूरोप की प्रमुख भाषाओं में अनुदित हो चुकी हैं। लालाजी परदेस में रहकर भी अपने देश और देशवासियों के उत्थान के लिए काम करते रहे थे। अपने चार वर्ष के प्रवास काल में उन्होंने 'इंडियन इन्फॉर्मेशन' और 'इंडियन होमरूल' दो संस्थाएं सक्रियता से चलाईं। लाला लाजपत राय ने जागरूकता और स्वतंत्रता के प्रयास किए। 'लोक सेवक मंडल' स्थापित करने के साथ ही वह राजनीति में आए।

असहयोग आन्दोलन में सहभागिता

20 फरवरी, 1920 को जब लाला लाजपत राय स्वदेश लौटे तो अमृतसर में 'जलियांवाला बाग काण्ड' हो चुका था और सारा राष्ट्र असन्तोष तथा क्षोभ की ज्वाला में जल रहा था। इसी बीच महात्मा गाँधी ने 'असहयोग आन्दोलन' आरम्भ किया तो लालाजी पूर्ण तत्परता के साथ इस संघर्ष में जुट गये, जो सैद्धांतिक तौर पर रॉलेक्ट एक्ट के विरोध में चलाया जा रहा था। 1920 में ही उन्होंने पंजाब में असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व किया, जिसके कारण 1921 में आपको जेल हुई। इसके बाद लालाजी ने 'लोक सेवक संघ' की स्थापना की। उनके नेतृत्व में यह आंदोलन पंजाब में जंगल की आग की तरह फैल गया और जल्द ही वे 'पंजाब का शेर' या 'पंजाब केसरी' जैसे नामों से पुकारे जाने लगे। बाद में वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बने। उन दिनों सरकारी शिक्षण संस्थानों के बहिष्कार, विदेशी वस्त्रों के त्याग, अदालतों का बहिष्कार, शराब के विरुद्ध आन्दोलन, चरखा और खादी का प्रचार जैसे कार्यक्रमों को कांग्रेस ने अपने हाथ में ले रखा था, जिसके कारण जनता में एक नई चेतना का प्रादुर्भाव हो चला था। इसी समय लालाजी को कारावास का दण्ड मिला, किन्तु खराब स्वास्थ्य के कारण वे जल्दी ही रिहा कर दिये गये।

राजनीतिक मतभेद

1924 में लालाजी कांग्रेस के अन्तर्गत ही बनी स्वराज्य पार्टी में शामिल हो गये और 'केन्द्रीय धारा सभा' के सदस्य चुन लिए गये। जब उनका पण्डित मोतीलाल नेहरू से कतिपय राजनैतिक प्रश्नों पर मतभेद हो गया तो उन्होंने 'नेशनलिस्ट पाटी' का गठन किया और पुनः असेम्बली में पहुँच गये। अन्य विचारशील नेताओं की भाँति लालाजी भी कांग्रेस में दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाली मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति से अप्रसन्नता अनुभव करते थे, इसलिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा मदनमोहन मालवीय के सहयोग से उन्होंने 'हिन्दू महासभा' के कार्य को आगे बढ़ाया। 1925 में उन्हें 'हिन्दू महासभा' के कलकत्ता अधिवेशन का अध्यक्ष भी बनाया गया। ज्ञातव्य है कि उन दिनों 'हिन्दू महासभा' का कोई स्पष्ट राजनैतिक कार्यक्रम नहीं था और वह मुख्य रूप से हिन्दू संगठन, अछूतोद्धार, शुद्धि जैसे सामाजिक कार्यक्रमों में ही दिलचस्पी लेते थे। इसी कारण कांग्रेस से उसे थोड़ा भी विरोध नहीं था। यद्यपि संकीर्ण दृष्टि से अनेक राजनैतिक कर्मी लालाजी के 'हिन्दू महासभा' में रुचि लेने से नाराज भी हुए, किन्तु उन्होंने इसकी कभी परवाह नहीं

की और वे अपने कर्तव्यपालन में ही लगे रहे।

हरिजन उद्धार

सन् 1912 में लाला लाजपत राय ने एक 'अछूत कॉन्फ्रेंस' आयोजित की थी, जिसका उद्देश्य हरिजनों के उद्धार के लिये ठोस कार्य करना था।

ओजस्वी लेखक

लाला लाजपत राय जीवनपर्यंत राष्ट्रीय हितों के लिए जूझते रहे। वे उच्च कोटि के राजनीतिक नेता ही नहीं थे, अपितु ओजस्वी लेखक और प्रभावशाली वक्ता भी थे। 'बंगाल की खाड़ी' में हजारों मील दूर मांडले जेल में लाला लाजपत राय का किसी से भी किसी प्रकार का कोई संबंध या संपर्क नहीं था। अपने इस समय का उपयोग उन्होंने लेखन कार्य में किया। लालाजी ने भगवान श्रीकृष्ण, अशोक, शिवाजी, स्वामी दयानंद सरस्वती, गुरुदत्त, मेत्सिनी और गैरीबाल्डी की संक्षिप्त जीवनियाँ भी लिखीं। 'नेशनल एजुकेशन', 'अनहैप्पी इंडिया' और 'द स्टोरी ऑफ माई डिपोर्टेशन' उनकी अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं। उन्होंने 'पंजाबी', 'वंदे मातरम्' (उर्दू) और 'द पीपुल' इन तीन समाचार पत्रों की स्थापना करके इनके माध्यम से देश में 'स्वराज' का प्रचार किया। लाला लाजपत राय ने उर्दू दैनिक 'वंदे मातरम्' में लिखा था-

'मेरा मजहब हकपरस्ती है, मेरी मिल्लत कौमपरस्ती है, मेरी इबादत खलकपरस्ती है, मेरी अदालत मेरा जमीर है, मेरी जायदाद मेरी कलम है, मेरा मंदिर मेरा दिल है और मेरी उमंगें सदा जवान हैं।'

जब वे जेल से लौटे तो विकट समस्याएँ सामने थीं। 1914 में विश्वयुद्ध छिड़ गया था और विदेशी सरकार ने भारतीय सैनिकों की भर्ती शुरू कर दी थी।

लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक और विपिनचंद्र पाल को 'लाल-बाल-पाल' के नाम से जाना जाता है। इन नेताओं ने सबसे पहले भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग उठाई थी।

निधन

3 फरवरी, 1928 को साइमन कमीशन भारत पहुँचा, जिसके विरोध में पूरे देश में आग भड़क उठी। लाहौर में 30 अक्टूबर, 1928 को एक बड़ी घटना घटी, जब लाला लाजपत राय के नेतृत्व में साइमन कमीशन का विरोध कर रहे युवाओं को बेरहमी से पीटा गया। पुलिस ने लाला लाजपत राय की छाती पर निर्ममता से लाठियाँ बरसाईं। वे बुरी तरह घायल हो गए। इस समय अपने अंतिम भाषण में उन्होंने कहा था-

मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत की कील बनेगी।

और इस चोट ने कितने ही ऊधमसिंह और भगतसिंह तैयार कर दिए, जिनके प्रयत्नों से हमें आजादी मिली।

इस घटना के 17 दिन बाद यानि 17 नवम्बर, 1928 को लाला जी ने आखिरी सांस ली।

स्रोत : इंटरनेट

.....पृष्ठ 10 का शेष

भारतमाता के चरणों में बलिदान देने को तत्पर था।

अत: 26 जनवरी को उन सभी देशभक्तों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए, गणतंत्र दिवस का राष्ट्रीय पर्व भारतवर्ष के कोने-कोने में बड़े उत्साह तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। प्रति वर्ष इस दिन प्रभात फेरियां निकाली जाती है। भारत की राजधानी दिल्ली समेत प्रत्येक राज्य तथा विदेशों के भारतीय राजदूतावासों में भी यह त्योहार उल्लास व गर्व से मनाया जाता है।

26 जनवरी का पर्व देशभक्तों के त्याग, तपस्या और बलिदान की अमर कहानी समेटे हुए है। प्रत्येक भारतीय को अपने देश की आजादी प्यारी थी। भारत की भूमि पर पग-पग में उत्सर्ग और शौर्य का इतिहास अंकित है। किसी ने सच ही कहा है-'कण-कण में सोया शहीद, पत्थर-पत्थर इतिहास है।' ऐसे ही अनेक देशभक्तों की शहादत का परिणाम है, हमारा गणतान्त्रिक देश भारत।

26 जनवरी का पावन पर्व आज भी हर दिल में राष्ट्रीय भावना की मशाल को प्रज्ज्वलित कर रहा है। लहराता हुआ तिरंगा रोम-रोम में जोश का संचार कर रहा है, चहुँओर खुशियों की सौगात है। हम सब मिलकर उन सभी अमर बलिदानियों को अपनी भावांजली से नमन करें, वंदन करें।

जय हिन्द, जय भारत

स्रोत : इंटरनेट

धर्म, जाति, समुदाय, नस्ल या भाषा के नाम पर वोट संबंधी निर्णय स्वागत योग्य

-डॉ. सुरेन्द्र जैन

नई दिल्ली। जनवरी 02, 2017. राजनीतिक पार्टियों द्वारा धर्म,जाति, समुदाय, नस्ल या भाषा के नाम पर वोट मांगने पर सर्वोच्च न्यायालय के रोक लगाने के फैसले का विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने स्वागत किया है। विहिप के संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने निर्णय को अभूतपूर्व बताते हुए कहा है कि जाति, समुदाय तथा धर्म के आधार पर राजनीति से देश का बहुत नुकसान हुआ है। यहाँ तक कि इससे अनेक बार राष्ट्रीय अखण्डता को भी नुकसान पहुंचा है। उन्होंने कहा कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय से तुष्टिकरण के आधार पर की जाने वाली वोट बैंक की राजनीति पर जो आघात हुआ है उसके दूरगामी परिणाम होंगे और यह फैसला राष्ट्र निर्माण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

उन्होंने यह भी कहा कि अब इस फैसले के अक्षरश: पालन कराने की बड़ी जिम्मेदारी चुनाव आयोग की है। हम भारत के चुनाव आयोग से अपील करते हैं कि जो भी राजनेता या दल इस आदेश या इसके किसी भाग का पालन नहीं करते, उनकी चुनावी मान्यता को अविलम्ब रद्द कर दिया जाए।

ज्ञातव्य रहे कि सर्वोच्च न्यायालय ने सोमवार को कहा कि जाति, समुदाय, धर्म तथा भाषा के नाम पर वोट मांगना अवैध है। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति टी.एस. ठाकुर के नेतृत्व में एक संवैधानिक पीठ ने अधिनियम की धारा 123 (3) के आधार पर 4:3 के बहुमत से फैसले के आदेश को पारित किया।

जारी कर्ता: **विनोद बंसल**
(राष्ट्रीय प्रवक्ता) विश्व हिन्दू परिषद
@vinod_bansal M&9810949109

शत शत नमन हे देव दयानंद

-विमलेश बंसल 'आर्या'

धन्य हो गयी पावन वसुधा,
धन्य हुई धरती गुजरात।
वैदिक दीप को पुन: जलाकर,
जगमग कर दिया शुभ प्रभात।
देव कहूँ महादेव कहूँ,
नहीं शब्द पास में है मेरे।
गौकरुणानिधि लिख कर गौ हित,
कार्य कर दिए बहुतेरे।
खा खा पत्थर ईंट व विष भी,
अनथक चलते रहे पग हाथ।।
वैदिक दीप.....

नारी जाति की जो स्थिति, आज देखते हम सारे।
देव दयानंद के कारण ही, ब्रह्मा बन कर उच्चारे।
ऊँच नीच का भेद मिटा, बतलाया वर्ण व्यवस्था पाथ।
वैदिक दीप.....

सत्य अर्थ कर दिया प्रकाश, वेदों के देकर सद् प्रमाण।
सच्चे शिव के दर्शन कर, दिखलाया पथ ईश्वर संज्ञान।।
ऋग्वेद आदि भाष्य लिख कर, दूर किया भ्रम झंझावात।।
वैदिक दीप.....

बनकर नींव राष्ट्र के प्रहरी, गुँजा दिया सुंदर जयघोष।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् हेतु, बढ़ा दिए तुमने पग ठोस।
शत-शत नमन हे देव दयानंद, भूल न पाएं तव सौगात।।
वैदिक दीप....

त्याग तपस्या ब्रह्मचर्य, तन मन भगवा से आच्छादित।
हे वीर शिरोमणि तुम्हें प्रणाम,
चरणों में शीश झुकाएं नित।
'विमल' धवल उज्ज्वल यश कीर्ति,
फैल रही चहुँ दिशि दिन रात।।
वैदिक दीप.....

दूरभाष-8130586002
vimleshbansalarya69@gmail-com
पता: 329 द्वितीय तल संत नगर,
पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-65

सूर्य की पहली किरण से करें नव-वर्ष का स्वागत

-विनोद बंसल, राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप

काल का प्रत्येक पल कोई न कोई महत्त्व रखता है, किंतु कुछ तिथियों का भारतीय काल गणना (कैलेंडर) में विशेष महत्त्व है। भारतीय नव वर्ष (विक्रमी संवत्) का पहला दिन (यानी वर्ष प्रतिपदा) अपने आप में अनूठा है। इसे नव संवत्सर भी कहते हैं। इस दिन पृथ्वी सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है तथा दिन-रात बराबर होते हैं। इसके बाद से ही रात की अपेक्षा दिन बड़ा होने लगता है। काली अंधेरी रात के अंधकार को चीर कर चांदनी अपनी छटा बिखेरना शुरू कर देती है। ऋतुओं का राजा होने के कारण वसंत में प्रकृति का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। फागुन के रंग और फूलों की सुगंध से तन-मन प्रफुल्लित रहता है। विक्रमी संवत् की वैज्ञानिकता उल्लेखनीय है। पराक्रमी सम्राट विक्रमादित्य द्वारा प्रारंभ किए जाने के कारण इसे विक्रमी संवत् के नाम से जाना जाता है। विक्रमी संवत् के बाद ही वर्ष को 12 माह का और सप्ताह को 7 दिन का माना गया। इसके महीनों का हिसाब सूर्य व चंद्रमा की गति के आधार पर रखा गया। विक्रमी संवत् का प्रारंभ अंग्रेजी कैलेंडर ईस्वी सन् से 57 वर्ष पूर्व ही हो गया था। चंद्रमा के पृथ्वी के चारों ओर एक चक्कर लगाने को एक माह माना जाता है, जबकि यह 29 दिन का होता है। हर मास को दो भागों में बांटा जाता है। कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष। कृष्णपक्ष में चन्द्रमा घटता है और शुक्लपक्ष में चन्द्रमा बढ़ता है। दोनों पक्ष प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी आदि ऐसे ही चलते हैं। कृष्ण पक्ष के अंतिम दिन (यानी अमावस्या को) चन्द्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता, जबकि शुक्ल पक्ष के अंतिम दिन (यानी पूर्णिमा को) चन्द्रमा पूरे यौवन पर होता है। आधी रात के बदले सूर्योदय से दिन बदलने की व्यवस्था, सोमवार के स्थान पर रविवार को सप्ताह का पहला दिन मानना और चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के स्थान पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से वर्ष का आरंभ करने का एक वैज्ञानिक आधार है। इंग्लैंड के ग्रीनविच नामक स्थान से तारीख बदलने की व्यवस्था 12 बजे रात से इसलिए है क्योंकि उस समय भारत में भगवान सूर्य की अगवानी करने के लिए प्रातः 5.30 बज रहे होते हैं। वारों के नामकरण का वैज्ञानिक आधार देखें। आकाश में ग्रहों की स्थिति सूर्य से प्रारंभ होकर क्रमशः बुध, शुक्र, चंद्र, मंगल, गुरु और शनि की है। पृथ्वी के उपग्रह चंद्रमा सहित इन्हीं अन्य छह ग्रहों पर सप्ताह के

सात दिनों का नामकरण किया गया। तिथि घटे या बढ़े किंतु सूर्य ग्रहण सदा अमावस्या को होगा और चंद्र ग्रहण सदा पूर्णिमा को होगा, इसमें अंतर नहीं आ सकता। तीसरे वर्ष एक मास बढ़ जाने पर भी ऋतुओं का प्रभाव उन्हीं महीनों में दिखाई देता है, जिनमें सामान्य वर्ष में दिखाई पड़ता है। जैसे वसंत के फूल चैत्र-वैशाख में ही खिलते हैं और पतझड़ माघ-फागुन में ही होता है। इस प्रकार इस काल गणना में नक्षत्रों, ऋतुओं, महीनों व दिवसों आदि का निर्धारण पूरी तरह प्रकृति पर आधारित है। ग्रेगेरियन (अंग्रेजी) कैलेंडर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के समय को दर्शाती है। जबकि यूनानी काल गणना 3584 वर्ष, रोम की 2761 वर्ष, यहूदी 5772 वर्ष, मिस्र की 28675 वर्ष, पारसी 198879 वर्ष तथा चीन की 96002309 वर्ष पुरानी है। हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 114 वर्ष है। जिस प्रकार ईस्वी संवत् का संबंध यीशु मसीह से है, उसी प्रकार हिजरी संवत् का संबंध हजरत मुहम्मद साहब से है। किंतु विक्रमी संवत् का संबंध किसी व्यक्ति से न हो कर प्रकृति और खगोलीय सिद्धांतों से है।

वर्ष प्रतिपदा के दिन बसंत ऋतु अपने चरम पर होती है। चहुं-ओर हरियाली, फूलों की महक और कोयल की कूँक सुनाई पड़ती है मानो प्रकृति स्वयं विक्रमी सम्वत् के आगमन हेतु हमारा आह्वान कर रही हो। हम अपने प्रत्येक दिन का प्रारम्भ सूर्योदय की पहली किरण को प्रणाम कर प्रभु के ध्यान योग आराधना व यज्ञ से करते हैं। हम

शेष पृष्ठ 18 पर....

धार्मिक पवित्रता का प्रश्न

विभिन्न मुस्लिम व सेक्युलर बुद्धिजीवी व पत्रकार आदि अपने लेखों में प्राय: 'शांतिप्रिय जिहादी' मानसिकता के दर्शन कराते है। क्या किसी धर्म विशेष के अनुयायी अन्य धर्मावलंबियों पर अपना आधिपत्य जमाने के लिये उनका धर्म परिवर्तन करें या उनका समूल नष्ट करने के मार्ग पर चलते रहें तो उस धर्म विशेष की 'पवित्रता' को कोई कैसे स्वीकार कर सकता है?

केवल 1400 वर्षों में पूरी दुनिया में फैल चुके इस्लाम का आधार उसकी शिक्षा व दर्शन है जो कट्टरपंथी मुस्लिमों को बलात् धर्म परिवर्तन करने को उकसाती है। मानवतावादी समाज सामान्य स्थिति में धर्म परिवर्तन कभी नहीं करता। विशेष प्रलोभन, दुखदायी जीवन व कष्टकारी हिंसा ही किसी को धर्मपरिवर्तन के लिये विवश करती है।

आक्रान्ताओं के अत्याचारों से भरे हुए मुगलकालीन इतिहास को भुलाया नहीं जा सकता। वह कौन सी मानसिकता थी जिसने हमारी आस्थाओं के हजारों मंदिरों को तोड़ा, उसमें स्थापित देवी-देवताओं की मूर्तियों को अपमानित करके खंडित किया? हमारे विशालकाय विद्या के केंद्रों में ज्ञान के रुप में विद्यमान हमारे गौरवशाली इतिहास की पाडुलिपियों व ग्रन्थ आदि धरोहरों को भी नष्ट करके उन धर्मांधों की घृणित पिपासा शांत नहीं हुई, बल्कि अपनी जिहादी हिंसात्मक संस्कृति को फैलाया। अगर इतिहास को और गहराई से समझेंगे तो ज्ञात होगा कि भारतीय संस्कृति के वाहकों का सदियों तक सामूहिक कत्लेआम व धर्मपरिवर्तन होता रहा। हमारी महिलाओं, बालिकाओं और बालकों को अपनी वासनाओं का शिकार बनाने वाले कामान्ध लुटेरे लाखों की संख्या में उन्हें गुलाम बना कर अपने साथ भी ले जाते रहे। आज इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग समस्त मुसलमान धर्मांतरित हिंदुओं के ही वंशज है।

भारत में अगर सभी धर्मों को मानने की स्वतंत्रता है तो इसका अर्थ यह नहीं कि आक्रान्ताओं की लूटमार वाली संस्कृति को भारत की मानवतावादी संस्कृति पर थोपा जाय? यह कहना कि भारत भिन्न-भिन्न विचारों व संस्कृतियों का महान संगम है, अत्यंत भ्रामक व अशुद्ध है। वास्तविकता यह है कि भारतीय संस्कृति और उसकी सांस्कृतिक धरोहर विभिन्न विदेशी संस्कृतियों के बोझ तले सहिष्णुता के कारण कुचली जा रही है। बहुसंख्यक समाज अल्पसंख्यवाद की चपेट में आकर आत्मनिन्दा व आत्मघात का शिकार हो रहा है।

धर्मांतरण को उचित ठहराने वालों को यह भी सोचना चाहिये कि विश्व की अनेक संस्कृतियों का इस्लाम के अनुयायियों ने अनुचित ढंग से विध्वंस किया है। 'इस्लाम' जिहाद के बल पर दुनिया का इस्लामीकरण करने की सोच से बाहर नहीं निकल पा रहा है। साथ ही साम्राज्यवादी प्रवृति भी इस्लाम की दुर्बलता बनती जा रही है।

विभिन्न इस्लामिक विषयों के विशेषज्ञों की भूमिकायें अधिकतर रहस्यमय होती है। जबकि आज दुनिया इस्लामिक विद्याओं व जिहादी दर्शन के विद्वान अबू बकर बगदादी के आतंकियों की भूमिका को नित्य नये-नये प्रकार से काफिरो के हत्याकांडों को सोशल मीडिया पर देख रही है। इस्लामिक स्टेट व अलकायदा आदि आतंकवादी संगठनों का आधार इस्लामिक शिक्षायें नहीं, तो और क्या है? क्या किसी इस्लामिक धर्मगुरु या इनकी विद्याओं के विशेषज्ञों ने मानवता को रक्तरंजित करने वाले इन मजहबी आतंकवादियों पर कभी कोई अंकुश लगाने का प्रयास किया है? क्या ये विशेषज्ञ दुनिया को दारुल-इस्लाम बनाने की घिनौनी महत्त्वाकांक्षा से बाहर निकल कर कभी 'जियो और जीने दो' का सन्देश समझेंगे?

भवदीय

विनोद कुमार सर्वोदय

गाजियाबाद

.....पृष्ठ 17 का शेष

प्रकृति के पुजारी हैं। इसलिए हमारे यहां रात के अंधेरे में नव वर्ष का स्वागत नहीं होता बल्कि, नव वर्ष सूरज की पहली किरण का स्वागत करके मनाया जाता है।

Vinodbansal01@gmail-com
@vinod_bansal

कुनबे की कलह से ढहेगा समाजवादी साम्राज्य

-अर्पण जैन 'अविचल'

'वंशवाद' शब्द नेहरू-गांधी परिवार की निंदा के लिए विद्वत्ता का मुखौटा लगाने का अवसर देता है। किन्तु जब परिवारवाद की गिरफ्त में रहकर राजनीतिक अवधारणा का नवसिंचन होता है तो पौधा भी अल्पविकसित होने का राग ही अलापता है।

राजनीति में वंशवाद को लेकर हमारे जनमानस में अरसे से चर्चा, परिचर्चा और विमर्श होता रहा है जिनमें देश के विभिन्न राजनीतिक दलों और राजनेताओं पर वंशवादी होने का चस्पा लगता है। दूसरी तरफ वंशवाद का पोषण करने वाले इन दलों और इनके राजनेता इस चर्चा का अपने इस बड़े ही चिरपरिचित कथन से बचाव करते हैं कि समाज के हर पेशेवर डॉक्टर, इंजीनियर, खिलाड़ी, अभिनेताओं की संतानें भी आम तौर वही पेशा अपनाती हैं तो ऐसे में राजनेताओं के बेटे-बेटियों के राजनीति में प्रवेश पर हो हल्ला क्यों?

गौर करने लायक बात ये है कि ऐसे तर्क ना केवल कई राजनेता बल्कि कई राजनीतिक विश्लेषक भी उनके समर्थन में पेश करते रहते हैं। देखा जाए तो इस कथन का आशय आनुवांशिकी व तकनीकी तौर पर बड़ा सहज लगता है जिसे वंशवाद की वैध चाशनी चढ़ाकर बड़ी होशियारी से पेश कर दिया गया हो। परंतु गहराई से गौर करें तो राजनीति में खानदानवाद या वंशवाद के समर्थन में दिया जाने वाला यह तर्क एक ऐसा खतरनाक तर्क है जो हमारे लोकतांत्रिक सिद्धांतों और उससे गढ़ी गयी राजनीतिक विचारधारा का अपनी सुविधा से इस्तेमाल कर उसे बेहद चालाकी से स्वार्थगत व अवसरवादी चिंतन का मुलम्मा चढ़ा देने की तरह है। ये लोग भूल जाते हैं या जानते हुए इस बात की अनदेखी करते हैं कि जिस प्राचीन व मध्युगीन राजव्यवस्थाओं और सत्ता केन्द्रों के रूप में चलायमान राजशाही, सामंतशाही, बुर्जआशाही, कुलीनशाही के तंत्र को शनैः शनैः ध्वस्त कर समूची दुनिया में लोकतांत्रिक राजव्यवस्थाओं की स्थापना की गई। सैकड़ों सालों के अनवरत सुधारों, प्रयोगों, संघर्षों के बाद जिन आदर्शों और नैतिकताओं के आभूषणों से सुसज्जित कर इस लोकतांत्रिक राजव्यवस्था को दुनिया के भारत सहित तमाम देशों में सतत रूप से पहले से बेहतर बनाकर स्थापित किया गया, क्या आज उसी व्यवस्था में वंशवाद के रूप में कुलीन व सामंती स्वार्थों की नयी दीवारें नहीं खड़ी की जा रही हैं?

बरगद के पेड़ की भाँति गहरे समाजवादी साम्राज्य की विकसित पौध उस तने को काट गई जिससे पेड़ की हर शाखा जुड़ी हुई थी। आज वही परिवारवाद का तुनक चेहरा एक मुख्यमंत्री के सिंहासन को गर्जना के रूप में दृष्टि में आ गया। मुख्यमंत्री रहते हुए किसी व्यक्ति को पार्टी ने निष्कासित किया, मतलब देश में पहली बार इस तरह का फैसला हुआ। अखिलेश की समाजवादी पार्टी से 6 साल के लिए विदाई हो गई, परिवारवाद की पोषक समाजवादी पार्टी को यही परिवारवाद ले डूबा, ये सरयू के पानी की तासीर है कि वो हर बार राजनीति की नई लय तय करती है। आज भी वही हुआ, इतिहास के पन्नों में फिर नई सरहद... एक तरह से हर उद्दंडता का परिणाम मुख्यमंत्री तक को भुगतना पड़ सकता है यह सिद्ध कर दिया।

उत्तरप्रदेश में जातिवाद के बाद यदि कोई बड़ा फैक्टर है तो वह है परिवारवाद। बीते दिनों जिस तरह से मुलायमसिंह कुनबे में कलह दिख रही थी वो सपा के राजनीतिक हथकंडों की लुटिया डुबोने की साजिश ही है। अखिलेश और शिवपाल के कारण नेताजी से तनातनी और इसी बीच अमरसिंह की खामोशी एक साथ सभी रंग दिखा रही है। सत्य भी है, जिस परिवार में पटवारी से लेकर मुख्यमंत्री तक सब के सब मौजूद हो वहां आत्मसम्मान की लड़ाई होना लाजमी है। अखिलेश की मेट्रो परियोजना पर नेताजी का परिवार प्रेम भारी है।

मथुरा के जवाहरबाग कांड के दौरान भी ये सार्वजनिक हुए और माफिया सरगना मुख्तार अंसारी की सपा में एंट्री रोकने को लेकर भी। वैसे पूरे सत्ताकाल में प्रशासनिक

सुस्ती को छोड़ दें, तो उनके खिलाफ घपले-घोटाले का कोई आरोप नहीं है और उनकी व्यक्तिगत छवि बेदाग है, लेकिन मुजफ्फरनगर दंगों के बाद से ही बिखरा पार्टी का समीकरण दुरुस्त नहीं हो रहा। इससे चिंतित मुलायम, अमर सिंह व बेनी वर्मा जैसे नेताओं को घर वापस लाए हैं, जबकि पहले कहते थे कि नेताओं के नहीं, जनता के जमावड़े में यकीन करते हैं। पार्टियों में स्थिर होता वंशवाद राजनीति की मटीयामेट करने के लिए काफी है। पैट्रिक फ्रेंच के अनुसार वर्तमान में राजनीतिक दलों में वंशवाद कुछ इस प्रकार है-

एनसीपी - 77.8 प्रतिशत 9 में से 7
बीजेडी - 42.9 प्रतिशत 14 में से 6
कांग्रेस - 37.5 प्रतिशत 208 में से 78
सपा - 27.3 प्रतिशत 22 में से 6
बीजेपी - 19 प्रतिशत 116 में से 22

वाह नेताजी.... खैर ये जनता के साथ भावनात्मक रिश्ता बनाने की रणनीति का हिस्सा भी हो सकता है... समाजवादी सोच को अपना संपूर्ण जीवन अर्पण करने वाले अनुभवी मुलायम सिंह की आगामी चुनावों को लेकर बनाई रणनीति का हिस्सा हो सकता है, ये 'कुनबे का कलह'...

परिणाम समय के गर्भ में है, किन्तु इतिहास स्वयं को दोहराता है। राममनोहर लोहिया के समाजवाद के जिस तरह से टुकड़े हुए वही हाल इस कुनबे का भी हो ही गया ...

अखिलेश के पास अब विभीषण बनने का ही विकल्प है .... जैसा की सन् 1987 में वी. पी. सिंह ने किया था। वी. पी. सिंह ने 1987 में कांग्रेस द्वारा निष्कासित किए जाने पर विभीषण की भूमिका निभाने का मन बना लिया था। लेकिन यह विभीषण रावण की नहीं बल्कि राम की पराजय चाहता था। बोफोर्स कांड के ठीक बाद का परिपेक्ष राजनीति का वो रंगीन ठीकरा था जिसके फूटने की खुशी विपक्ष से ज्यादा वी. पी. सिंह को थी....

वंशवाद के प्रेरक कारकों में सुसंस्कृत और अशिक्षित दोनों तरह के मतदाताओं की संकीर्णता भी है। सामंतवादी तत्वों के चुनावों में मतदाताओं का लोकतंत्रीय आचरण कोर्निश करने लगता है। इस मिथक को टूटने में पचास वर्षों से ज्यादा समय लगा। सामंतवादी ठसक पूरी दुनिया में फिर भी कायम है। राष्ट्रमंडल की मुखिया इंग्लैंड की महारानी हैं। नोबेल पुरस्कार स्वीडन के महाराजा के हाथों दिया जाता है। भारतीय संविधान से राजप्रमुख शब्द हटाया नहीं गया है, भले ही कोई राजप्रमुख नहीं बचा। देश के बीमार (बिहार और उत्तर प्रदेश आदि) इलाकों और अन्य प्रदेशों में भी जातीय और वर्णाश्रमी वंशवादिता सामान्य जनता के जेहन में ठुंसी पड़ी है। हजारों ऐसे गांव हैं जहां ब्राह्मण-श्रेष्ठता का परचम लहराता है। कुलीन दिखते लेकिन निष्ठुर क्षत्रियों की हुकूमत का जहर जनता की जीहुजूरी में बहता रहता है। उच्चकुलीन तबकों में वैश्यों की आर्थिक इजारेदारी भी ऑक्टोपस की तरह अकिंचनों की अर्थव्यवस्था को जकड़े हुए है।

सवर्ण उम्मीदवार उपेक्षित इलाकों से भी पिछड़ों और दलितों के मुकाबले जीतते रहते हैं। तथाकथित सामाजिक अभियांत्रिकी का अब भी मैदानी अनुतोष मिलता नहीं है। ऐसे में ठर्र राजनीति में प्रतिद्वंद्विता और लोकप्रियता की दुधारी तलवार पर चलते हुए लोकतांत्रिय राजवंशियों के उत्तराधिकारी मुकाबला करते हैं तो उसे वंशवाद की ठठरी की तरह नहीं जकड़ा जा सकता।

मुलायम तो अपने परिवार मोह से बाहर ही नहीं आ रहे हैं और सियासतदानों में त्राहिमाम-त्राहिमाम का राग चरम पर है। आज जब मुलायम ने सपा की सर्जरी के तौर पर नौनिहाल अखिलेश को पुनः साधा नहीं तो निश्चित तौर पर आगामी विधानसभा में 'खराब दिन' आने से कोई रोक नहीं सकता। सपा के आज के हाल के लिए जिम्मेदार अमरसिंह को माना जा रहा है, इसी हाल पर कवि जगदीश सोलंकी की चार पंक्तियाँ सटीक बैठती है-

'बीज जैसे दोगले जो सोख ले जमीन सारी...
घर के आस-पास की जमीन में न रखना..
और साँप गर डसना भी छोड़ दे तो प्यारे...
भूल कर भी इसे आस्तीन में रखना .....'

पत्रकार एवम् स्तंभकार, इंदौर
09893877455, Arpan455@gmail-com

हैप्पी न्यू ईयर या नववर्ष, तय कीजिए

-लोकेन्द्र सिंह

दृश्य एक। सुबह के पांच बजे का समय है। चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि यानी वर्ष प्रतिपदा का मौका है। ग्वालियर शहर के लोग शुभ्रवेश में जल विहार की ओर बढ़े जा रहे हैं। जल विहार के द्वार पर धवल वस्त्र पहने युवक-युवती खड़े हैं। उनके हाथ में एक कटोरी है। कटोरी में चंदन का लेप है। वे आगंतुकों के माथे पर चंदन लगा रहे हैं। भारतीय संगीत की स्वर लहरियां गूंज रही हैं। सुर-ताल के बेजोड़ मेल से हजारों मन आल्हादित हो रहे हैं। बहुत से लोगों ने तांबे के लोटे उठाए और जल कुण्ड के किनारे पूर्व की ओर मुंह करके खड़े हो गए। सब अर्घ्य देकर नए वर्ष के नए सूर्य का स्वागत करने को तत्पर हैं। तभी सूर्यदेव ने अंगडाई ली। बादलों की चादर को होले से हटाया। अपने स्वागत से शायद सूर्यदेव बहुत खुश हैं। तभी उनके चेहरे पर विशेष लालिमा चमक रही है। सूर्यदेव के आते ही जोरदार संघोष हुआ। सबने आत्मीय भाव से, सकारात्मक ऊर्जा से भरे माहौल में एक-दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं।

दृश्य दो। दिसम्बर की आखिरी रात। पुलिस परेशान है कि 'हैप्पी न्यू ईयर वालों' को कैसे संभाला जाएगा? शराब पीकर बाइक-कार को हवाईजहाज बनाने वालों को कैसे आसानी से लैंड कराया जा सकेगा? खैर पुलिस के तनाव के बीच जैसे ही रात 12 बजे घड़ी की दोनों सुईयां एक जगह सिमटीं, जोरदार धमाकों की आवाज आती है। आसमान आतिशबाजी से जगमग हो उठा। आस-पास के घरों से म्यूजिक सिस्टम पर कान-फोडू संगीत बज उठा है। देर शाम से नए साल के स्वागत में शराब पी रहे लडके अपने बाइक पर निकल पड़े हैं। कुछ बाइकर्स कॉलोनी में भी आए हैं। सीटी बजाते हुए, चीखते-चिल्लाते हुए, धूम मचा रहे हैं। नारीवादी आंदोलन के कारण खुद को 'ठीक से' पहचान सकीं लड़कियों ने भी लड़कों से पीछे नहीं रहने की कसम खा रखी है। शोर-शराबे के बीच जैसे-तैसे सो सके। सुबह उठे तो अखबार में फोटो-खबर देख-पढ़कर जाना कि नए साल का स्वागत बड़ा जोरदार हुआ। कई लीटर शराब पी ली गई। बहुत-से मुर्गे-बकरे भी निपट गए। कुछ लोग पीकर सड़क किनारे गटर के ढक्कन पर पाए गए तो कुछ लोग सड़क दुर्घटना में घायल हो गए, जिनकी एक जनवरी अस्पताल में बीती और भी बहुत कुछ है बताने को।

दो तस्वीर आपने देखीं। इनमें नया कुछ नहीं है। कुछ दिन से यह सब बताने वाले चित्र आपके फेसबुक पेज और व्हाट्सअप पर आ रहे होंगे। हो सकता है आपने इन्हें लाइक-शेयर-कमेन्ट भी किया हो। हो सकता है आप थोड़ी देर के लिए भारतीय हो गए हों और आपने इन्हें आगे बढ़ा दिया हो। आपको अचानक से अपनी संस्कृति खतरे में नजर आई हो। बहरहाल, समस्या यहां सिर्फ संस्कृति संरक्षण की नहीं है। यहां यह प्रश्न भी नहीं है कि मेरी संस्कृति अच्छी, उनकी संस्कृति घटिया। यहां प्रश्न लोगों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भी नहीं है। असल में प्रश्न तो यह है कि हमें किस तरफ आगे बढ़ना चाहिए? हमें भारतीय मूल्यों, भारतीय चिंतन और भारतीय संस्कृति की ओर बढ़ना चाहिए या फिर पश्चिम से आए कचरे को भी सिर पर रखकर दौड़ लगा देना है? क्या भारतीय संस्कृति पुरातनपंथी है? क्या वर्ष प्रतिपदा 'बैकवर्ड' समाज का त्योहार है और न्यू ईयर 'फॉरवर्ड' का? प्रश्न तो यह भी है कि वास्तव में हमारा आत्म गौरव कब जागेगा? कब हमारी तरुणाई अंगडाई लेगी? कब हम अपने मूल्यों में अधिक भरोसा दिखाएंगे? कब हम अपनी चीजों को दुनियां से सामने प्रतिष्ठित करेंगे?

समय तो तय करना पड़ेगा, खुद को बदलने का। सोचते-सोचते, भाषण देते-देते, कागज कारे करते-करते बहुत वक्त बीत गया है। अब समय आ गया है कि हम भारतीय हो जाएं। आखिर कब तक प्रगतिशील दिखने के लिए दूसरे का कोट-जैकेट पहने रहेंगे? अब हम जान रहे हैं कि एक जनवरी को हमारा नववर्ष नहीं है। कारण भी क्या हैं कि एक जनवरी को नववर्ष मनाया जाए? सिर्फ

यही कि अंग्रेजी कैलेण्डर बदलता है। अब तय कीजिए क्या यह हमारे लिए उत्सव मनाने का कारण हो सकता है? यदि हो सकता है तो निश्चित ही हमारे पुरखे तय कर गए होते। हम तो वैसे भी उत्सवधर्मी हैं, त्योहार मनाने के मौके खोजते हैं। लेकिन, हमने इस नववर्ष को उत्सव घोषित नहीं किया, क्योंकि हमारे लिए एक जनवरी को नया साल मनाने का कोई कारण नहीं था। हिन्दू जीवनशैली पूर्णत: वैज्ञानिक है। यह तथ्य सिद्ध हो चुका है। इसीलिए भारतीय मनीषियों ने प्रकृति के चक्र को समझकर बताया कि चैत्र से नववर्ष शुरू होता है। उस वक्त मौसम बदलता है। वसंत ऋतु का आगमन होता है। प्रकृति फूलों से मुस्काती है। फसल घर आती है तो किसानों के चेहरे पर खुशी चमकती है। दुनिया के दूसरे कैलेण्डर से भारतीय कैलेण्डर की तुलना करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि भारतीय मनीषियों की कालगणना कितनी सटीक और बेहतर थी। वर्ष प्रतिपदा को ही नववर्ष मनाने का एक प्रमुख कारण यह है कि भारतीय कालगणना के मुताबिक इसी दिन पृथ्वी का जन्म हुआ था।

बहुत से विद्वान कहते हैं कि जब ईस्वी सन् ही प्रचलन में है तो क्यों भारतीय नववर्ष को मनाने पर जोर दिया जाए। जब एक जनवरी से ही कामकाज का कैलेण्डर बदल रहा है तो इसे ही नववर्ष मनाया जाना चाहिए। जवाब वही है, सनातन। जब सब काम ग्रेगेरियन कैलेण्डर से ही किए जा रहे हैं तो फिर निजी जीवन में जन्म से लेकर अंतिम संस्कार तक की सभी प्रक्रियाओं के लिए पंचाग क्यों देखा जाता है। क्योंकि अंतर्मन में विश्वास बैठा है कि कालगणना में भारतीय श्रेष्ठ थे। भारतीय कैलेण्डर का पूर्णत: पालन करने पर कोई क्या कहेगा, इसकी चिंता हमें खाए जाती है। सारी चिंताएं छोड़कर अपने कैलेण्डर को प्रचलन में लाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए। एक मौका हाथ आया था लेकिन पाश्चात्य प्रेम में फंसे हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने वह मौका खो दिया था। वर्ष 1952 में वैज्ञानिक और औद्योगिक परिषद ने पंचाग सुधार समिति की स्थापना की थी। समिति ने 1955 में अपनी रिपोर्ट में विक्रम संवत् को भी स्वीकार करने की सिफारिश प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से की थी। लेकिन, पंडितजी ने इस सिफारिश को नजरअंदाज कर दिया। खुद को सेक्यूलर कहने वाले प्रधानमंत्री ने ऐसे कैलेण्डर को मान्यता दी, जिसका संबंध एक सम्प्रदाय से है। जनवरी से शुरू होने वाले नववर्ष का संबंध ईसाई सम्प्रदाय और ईसा मसीह से है। रोम के सम्राट जूलियस सीजर इसे प्रचलन में लाए। जबकि भारतीय नववर्ष का संबंध हिन्दू धर्म से न होकर प्रकृति से है। यानी खुद को सेक्यूलर कहने वाले विद्वानों को भी अंग्रेजी नववर्ष का विरोध कर पंथ निरपेक्ष भारतीय कैलेण्डर के प्रचलन के लिए आंदोलन करना चाहिए।

बहरहाल, खुद से सवाल कीजिए कि अपने नववर्ष को भूल जाना कहां तक उचित है? अगर भारतीयपन बचा होगा तो निश्चित ही आप जरा सोचेंगे। यह भी सोचेंगे कि वास्तव में उत्सव के रंग एक जनवरी के नववर्ष में दिखते हैं या फिर चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा में। उत्सव मनाने का तरीका पाश्चात्य का अच्छा है या भारत का? कब तक गुलामी के प्रतीकों को गले में डालकर घूमेंगे? अब अपने मूल्यों, अपनी संस्कृति, अपनी पहचान और अपने ज्ञान-विज्ञान को दुनिया में स्थापित करने का वक्त आ गया है।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं)

.....पृष्ठ 9 का शेष

सकते हैं। उन्होंने अपने परिवार के बारे में न सोचकर पूरे देश के बारे में सोचा। नेताजी के जीवन के कई और पहलू हमें एक नई ऊर्जा प्रदान करते हैं। वे एक सफल संगठनकर्ता थे। उनकी बोलने की शैली में जादू था और उन्होंने देश से बाहर रहकर 'स्वतंत्रता आंदोलन' चलाया। नेताजी मतभेद होने के बावजूद भी अपने साथियों का मान सम्मान रखते थे। उनकी व्यापक सोच आज की राजनीति के लिए भी सोचनीय विषय है।

स्रोत : इंटरनेट

असत्य वक्ता को परमात्मा कभी क्षमा नहीं करता। -**ऋग्वेद**

विहिप द्वारा स्वामी राघवानन्द जी महाराज के जन्मोत्सव पर स्वास्थ्य मेला और रक्तदान शिविर का आयोजन

नई दिल्ली : विश्व हिन्दू परिषद् के तत्वाधान में डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया जी द्वारा संचालित हिन्दू हेल्प लाईन व खुखरायण वर्ल्ड ब्रदरहुड द्वारा श्रद्धेय स्वामी राघवनानंद जी महाराज जी के 81वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में उदासीन आश्रम, आरामबाग, पहाड़गंज, नई दिल्ली में तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में भजन संध्या, स्वास्थ मेला एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि चिकित्सा कर्म हमारे सनातन धर्म में वर्णित पांच महादानों में से एक महत्त्वपूर्ण दान प्राण दान के रूप में माना जाता है। उन्होंने कहा कि हम देश के गरीब लोगों को स्वस्थ्य एवं नि:शुल्क चिकित्सा उपलब्ध कराना चाहते हैं। डॉ. तोगडिया जी ने कहा कि कैंसर जैसी भयानक बीमारियों से पीड़ित लोगों को हजार रूपये की दवाई दो सौ रूपये में उपलब्ध कराना चाहते हैं जिससे देशवासी आनन्दयुक्त सुखी जीवन जी सके और देश में मौजूद 45 करोड़ मरीजों की संख्या घटकर आधी रह जाये।

रक्तदान शिविर में करीब 200 लोगों ने रक्तदान किया और हजारों लोगों ने नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच का लाभ उठाया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को स्वामी

राघवानन्द जी ने आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर मा. ओम प्रकाश जी सिंहल, केन्द्रीय उपाध्यक्ष, विहिप, आर. के आनन्द पूर्व राज्यपाल, प्रांत उपाध्यक्ष श्री बृज मोहन सेठी, प्रांत सह मंत्री रामपाल जी, मीडिया प्रभारी महेन्द्र रावत एवं जय प्रकाश डाबला जी की उपस्थित उल्लेखनीय रही। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल के हजारों कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

-महेन्द्र रावत
मीडिया प्रभारी
विश्व हिन्दू परिषद
9953709155

❑

उत्तर प्रदेश में फहराया पाकिस्तान का झंडा

बदायूं। उत्तर प्रदेश के बदायूं में कुछ लोग एक धार्मिक कार्यक्रम के दौरान पाकिस्तान का झंडा लेकर घूम रहे थे। 12 दिसंबर को मामला सामने आया था जिसकी वजह से वहां सांप्रदायिक तनाव भी है। गुरुवार को एक वीडियो के आधार पर 60 लोगों के खिलाफ केस भी दर्ज कर लिया गया। वह वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया जा रहा था। इंडियन एक्सप्रेस को मिली जानकारी के मुताबिक वीडियो में 14 साल का एक लड़का सबसे पहले उस झंडे के साथ देखा गया। फिर उससे ही बाकी लोगों ने वह झंडा लिया। मामले की जांच में लगे एसएचओ ने कहा, 'लड़के की पहचान हो गई है। वह वहीं के एक दर्जी का लड़का है। लड़के के पिता से भी पूछताछ हुई थी। उन्होंने बताया कि लड़का खुद टेलर का काम सीख रहा है और उसने ही वह झंडा बनाया भी था। लड़के ने जानबूझकर पाकिस्तान जैसा झंडा नहीं बनाया था।' 'पाकिस्तान के झंडे और उस लड़के द्वारा फहराए जा रहे झंडे में थोड़ा फर्क है। पुलिस ने आईपीसी की धारा 295-ए के तहत मामला दर्ज किया है।

-जनसत्ता

विश्व हिंदू परिषद् द्वारा तुलसी पूजन दिवस समारोह

'विश्व हिंदू परिषद्' के कार्यकर्तायों द्वारा 25 दिसम्बर को 'तुलसी पूजन दिवस' के उपलक्ष्य में आई पी एक्सटेंशन, दिल्ली में तुलसी पूजन व नि:शुल्क तुलसी वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में विभिन्न स्थान से लोगों ने आकर तुलसी का औषधीय पौधा ग्रहण किया। इस अवसर पर संत राधाकांत वत्स जी ने तुलसी महिमा पर अपने विचार प्रकट किए। गौरक्षा प्रमुख राष्ट्र प्रकाश जी ने तुलसी पूजन दिवस के महत्त्व को लोगों के बीच रखा। वैद्य ओम प्रकाश द्विवेदी जी ने आयुर्वेद में तुलसी का औषधि के रूप में उपयोग की महिमा का व्याख्यान किया। लोगों को तुलसी के आयुर्वेदिक गुणों के बारे में जानकारी दी। दिल्ली प्रान्त के धर्मप्रसार उपाध्यक्ष दीपक गुप्ता ने इस उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन पर समस्त कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन किया और उनका उत्साह बढ़ाते हुए इस प्रकार के कार्यक्रमों की उपयोगिता पर बल दिया जो देश के संस्कार और संस्कृति के प्रति जनता को जागरूकता प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम समिति के राजेंद्र चौहान, रोशन मल्होत्रा, मनीष जैन, प्यारे कृष्ण गड़रु व राजन गोयल ने सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया। विश्व हिंदू परिषद् की तरफ से दिनेश सिंह, अखिलेश विश्वकर्मा, कृष्णा, दीपक, नीरू सहगल, चंद्रप्रकाश व सुनीता गुप्ता, सतेंद्र अग्रवाल, सुरेश गुप्ता, राहुल जैन, प्रदीप गुप्ता, मोनिका, भिमन्ना, ज्योति गौतम, राकेश बघेल, प्रमोद अग्रवाल, विपिन शर्मा इत्यादि ने कार्यक्रम सफल बनाने व तुलसी वितरण में सहयोग किया।

-दीपक गुप्ता, प्रान्त उपाध्यक्ष
विश्व हिंदू परिषद् (धर्मप्रसार) 9999144830

बर्मा, म्यंमार, बंगलादेश के नागरिकों का हो निर्वासन

जम्मू 23 दिसम्बर, पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए लीलाकरण शर्मा ने हुर्रियत कांफ्रेंस व अन्य अलगाववादी संगठनों द्वारा कश्मीर बंद की काल का विरोध करते हुए कहा कि 1947, 1965 एवं 1971 के विस्थापित लोगों को जम्मू-कश्मीर की अस्थाई नागरिकता प्रदान किये जाने के विरोध में हुर्रियत कांफ्रेंस ने बंद की काल दी थी जिसका विहिप कड़ा विरोध करता है और सरकार द्वारा उठाए गये पग का स्वागत करता है। विहिप प्रान्त अध्यक्ष ने हुर्रियत कांफ्रेंस व अन्य अलगाववादी संगठनों पर आरोप लगाते हुए कहा कि जम्मू-कश्मीर प्रान्त के बाहर से आये मुस्लिम समुदाय के लोग कश्मीर व जम्मू के कई भागों में अवैध रूप से बसे हैं और बर्मा, म्यंमार एवं बंगलादेश के नागरिक भी जम्मू-कश्मीर में अवैध रूप से रह रहे हैं। उन्हें राज्य में बसाने में पूरा योगदान स्थानीय मुस्लिम लोगों का है। अवैध रूप से रह रहे इन लोगों की सहायता मुस्लिम समुदाय से संबंधित एन.जी.ओ कर रहे हैं। उन्हें बिजली, पानी के कनेक्शन भी उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इन विस्थापितों को भारत की नागरिकता प्रधान की जानी चाहिए वह भारत के नागरिक हैं और उन्हें केन्द्र एवं राज्य स्तर की सरकारी नौकरियां दी जानी चाहिए। जम्मू-कश्मीर का राष्ट्र में अपना एक विशेष महत्त्व है, इसके अतर्गंत उन्हें स्टेट्स सब्जैक्ट की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। उन्होंने राज्य सरकार को 31 मार्च 2017 के पहले बर्मा, म्यंमार, बंगलादेश व अन्य देशों के अवैध रूप से रह रहे लोगों सत्यापन कर उन्हें पुन: अपने स्थानों पर वापिस भेजा जाए।

पत्रकारवार्ता में सर्व श्री शक्ति दत्त शर्मा, सुदर्शन खजूरिया, राकेश शर्मा आदि उपस्थित थे।

-राजेश भसीन

-उत्तरप्रदेश में कांग्रेस व सपा में दोस्ती की कवायद-

गठबंधन के सहारे राजनीतिक उत्थान की तलाश

-सुरेश हिन्दुस्थानी

कहावत है कि कमजोर को सहारे की तलाश रहती है। उत्तरप्रदेश में भी आगामी विधानसभा चुनाव के लिए सपा और कांग्रेस के लिए कुछ ऐसी ही स्थितियां निर्मित होती दिखाई दे रहीं हैं। जिसमें पिछले 27 वर्ष से लगभग वनवास जैसी स्थिति में जा चुकी कांग्रेस के लिए वर्तमान में भी उत्थान के रास्ते बंद जैसे दिखाई दे रहे हैं। कांग्रेस के लिए आज गठबंधन मजबूरी बन गया है। इसी प्रकार समाजवादी पार्टी के भीतरखाने में भी कहीं न कहीं अविश्वास की स्थिति का प्रादुर्भाव होता दिखाई दे रहा है। जिसमें उसके अंदर परिवार की लड़ाई को प्रमुख कारण माना जा रहा है। सपा के प्रदेश अध्यक्ष शिवपाल सिंह साफ शब्दों में यह कहते हुए दिखाई देते हैं कि वे मुख्यमंत्री के अधीनस्थ नहीं हैं। इसी कारण से उन्होंने कई पूर्व घोषित प्रत्याशी का फेरबदल कर दिया। जिसका एक उदाहरण माधोगढ़ में दिखाई दिया। जिसमें पूर्व घोषित प्रत्याशी का बदल दिया जाना और उसके बाद फिर से उसी प्रत्याशी को मैदान में लाना कहीं न कहीं पेचीदगी की स्थिति को निर्मित कर रहा है।

उत्तरप्रदेश में कांग्रेस की स्थिति का चिन्तन किया जाए तो यह साफ दिखाई देता है कि मुख्यमंत्री का चेहरा और प्रदेश अध्यक्ष बदल दिए जाने के बाद भी कांग्रेस अपनी स्थिति में सुधार करती हुई दिखाई नहीं दे रही। इसका कारण यह भी माना जा रहा है कि कांग्रेस के परिचित चेहरों ने जब चुनाव अभियान का सूत्रपात किया, उसमें कहीं न कहीं अपशगुन जैसी स्थितियां निर्मित हो गईं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अपने पूर्व के बयानों के कारण ही उलझते जा रहे हैं। इसी प्रकार कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी अपने चुनाव अभियान के दौरान ही बीमार हो गईं और उन्होंने अभियान को बीच में ही छोड़ दिया। मुख्यमंत्री का चेहरा बनाईं गईं शीला दीक्षित के साथ भी इसी प्रकार के हालात निर्मित हुए, जिसमें पहले दिन ही उनका मंच टूट गया। इसके अलावा प्रथम बात तो यह है कि इन सब चेहरों के बाद कांग्रेस को अपनी स्थिति में परिवर्तन होने की गुंजाइश कम ही दिखाई दी। इसलिए कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी की ओर हाथ बढ़ाए हैं। इसमें सबसे प्रमुख कारण यह माना जा रहा है कि कांग्रेस और सपा यह कतई नहीं चाहते कि उत्तरप्रदेश में भाजपा फिर से पांव जमाने में सफल हो। वर्तमान में कांग्रेस और सपा का एक ही अभियान है कि भाजपा को सत्ता में आने से रोका जाए और भाजपा जिस तरीके से चुनाव की तैयारियां कर रही है, उससे तो लगता है कि भाजपा को रोकने के लिए गैर भाजपा दलों को एक साथ आना होगा। हम जानते हैं कि बिहार में भाजपा की सरकार बनने के पूरे अवसर थे, लेकिन जनता दल यूनाइटेड, राष्ट्रीय जनता दल व कांग्रेस ने मिलकर चुनाव लड़कर भाजपा के सपनों पर पानी फेर दिया। यह बात अलग है कि आज बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार फिर से नरेन्द्र मोदी की ओर आने के लिए उतावले दिखाई दे रहे हैं। हालांकि बिहार का प्रयोग उत्तरप्रदेश में दोहराया जाएगा, इस बात के अवसर कम ही दिखाई दे रहे हैं। क्योंकि उत्तरप्रदेश में मुलायम सिंह यह कतई नहीं चाहेंगे कि उनका राजनीतिक प्रभाव कम हो।

उत्तरप्रदेश के होने वाले विधानसभा चुनाव में सत्ताधारी दल समाजवादी पार्टी ने बैसाखियों की तलाश प्रारंभ कर दी है, इससे प्रथम दृष्टया यह प्रमाणित होता है कि समाजवादी पार्टी अपने दम पर सत्ता प्राप्त करने का साहस खो चुकी है। समाजवादी पार्टी की ओर से भले ही यह दावे किए जा रहे हैं कि इस बार भी सपा की ही सरकार बनेगी। इस दावे में कितना दम है, यह इस बात से पता चल जाता है कि वह कांग्रेस पार्टी से गठबंधन करने की कवायद करने में जुटी हुई है। जहां तक कांग्रेस पार्टी का सवाल है तो उत्तरप्रदेश में उसके भविष्य को लेकर यही कहा जा सकता है कि उसके तमाम प्रयास फिलहाल नाकाफी ही साबित हो रहे हैं। उत्तरप्रदेश में चाहे वह पिछला विधानसभा का चुनाव हो या फिर बीता लोकसभा का चुनाव सभी में कांग्रेस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रमुख भूमिका का

प्रतिपादन किया था। लेकिन पूरी ताकत लगाने के बाद भी नतीजा और खराब होते चले गए। इस बार के चुनाव की तैयारियों को लेकर कांग्रेस ने जरुर कुछ नया करने का प्रयास किया था, लेकिन जैसे-जैसे समय निकलता गया, वैसे ही उसको विधानसभा चुनाव में परिणामों की स्थिति का भान हो गया। कांग्रेस ने कुछ दिनों पूर्व प्रदेश में सत्ता के लिए वापसी का सपना पाले बैठी बहुजन समाज पार्टी से गठबंधन करने का प्रयास किया था, लेकिन बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने कांग्रेस जैसी पार्टी से हाथ मिलाने से साफ इनकार कर दिया। ऐसे में राहुल गांधी के राजनीतिक अस्तित्व को बचाने के लिए उत्तरप्रदेश में कांग्रेस को पुन: पटरी पर लाने की कवायद की गई, उसके फलस्वरुप सपा से गठबंधन करने का रास्ता निकाला गया। हालांकि सपा के कुछ नेता वर्तमान में कांग्रेस से दूर रहने की सलाह दे रहे हैं, लेकिन कहीं न कहीं सपा को भी लगने लगा है कि बिना किसी के सहारे सपा राजनीतिक सत्ता को फिर से प्राप्त कर पाने में असफल ही सिद्ध होगी। भारतीय राजनीति में यह सत्य है कि कोई भी दल तभी गठबंधन करने की ओर प्रवृत होता है, जब उसे अकेले चलने में खतरा महसूस होने लगता है। वर्तमान में समाजवादी पार्टी संभावित खतरे को टालने के लिए कांग्रेस की ओर कदम बढ़ाने का प्रयास कर रही है। अगर दोनों मिलकर चुनाव लड़ते हैं तो भी इस बात की पुष्टि नहीं हो सकती कि प्रदेश में फिर से सपा सरकार ही बनेगी। क्योंकि अभी कुछ दिनों पूर्व हुए पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी ने जिन राज्यों में क्षेत्रीय दलों को समर्थन दिया था, उनमें कांग्रेस के साथ ही उन दलों को भी जनता ने पूरी तरह से नकार दिया था। तमिलनाडु में करुणानिधि को पूरा विश्वास हो गया था कि अबकी बार वही सरकार बनाएंगे, लेकिन कांग्रेस के साथ चलने के कारण उसका भी बंटाधार हो गया। इतना ही कांग्रेस पार्टी वर्तमान में सिमटती ही चली जा रही है। ऐसे में कांग्रेस को डूबता हुआ जहाज निरुपित किया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं कही जाएगी। प्रदेश में समाजवादी पार्टी ने एक प्रकार से डूबते हुए जहाज का सहारा लिया है। प्रदेश में बसपा ने संभवत: इसी बात को ध्यान में रखकर ही कांग्रेस से दोस्ती करने को नकार दिया कि कहीं ऐसा न हो जाए कि कांग्रेस के साथ वह भी डूब जाए। अब प्रदेश में सत्ता का संचालन करने वाली सपा ने कांग्रेस की ओर हाथ बढ़ाया है तो इस बात की कम ही गारंटी लग रही है कि सपा प्रदेश में पुन: सत्ता संभाल पाएगी।

द्वारा श्री वी. पी. चौबे
296/6 ई उमाशंकर कम्पाउंड,
बैंक ऑफ बड़ौदा के पीछे
झोकन बाग, झांसी (उत्तरप्रदेश)
मोबाइल : 09455099388

भारतीय मूल की महिला बनीं मेयर

वाशिंगटन। अमेरिका में पहली बार भारतीय मूल की एक अमेरिकी महिला सविता वैद्यनाथन को कैलिफोर्निया के कूपरटिनो शहर की नयी मेयर चुना गया है। गौरतलब है कि कूपरटिनो ऐपल कंपनी के मुख्यालय की वजह से जाना जाता है। सविता ने एमबीए किया है। वे अमेरिका में ही एक हाई स्कूल में मैथ्स की टीचर और एक कमर्शियल बैंक में ऑफिसर रह चुकी हैं। सविता ने पिछले सप्ताह आयोजित एक समारोह में पद की शपथ ली। समारोह में उनकी मां भी मौजूद थीं, जो कि इस मौके के लिए खासतौर पर भारत से वहां पहुंची थीं।

-दै0ट्रिब्यून

अमृत-वचन

न हिंस्यास् सर्वभूतानि मैत्रायणगत: चरेत्।
नेदं जीवितमासाद्य वैरं कुर्वीत केनचित्।। महा. वन. प. 213-34

संसार में सुखी रहने का सबसे सरल यही एक उपाय है कि व्यक्ति किसी भी प्राणी की हिंसा न करे। वह प्राणीमात्र के प्रति मैत्रीभाव रखे। बड़ी कठिनाइयों से प्राप्त होने वाले इस मनुष्य-जीवन को प्राप्त कर व्यक्ति (पुन: नरक से बचने के लिए) किसी से भी द्वेष न करे।